आईएसएसएन ISSN: 2455-9105

इकाEC

# ईसीआईएल गौरव

## 'आरडीई' विशेषाँक

वर्ष-5 अंक-6 अर्धवार्षिक हिन्दी गृहपत्रिका अक्टूबर,2015-मार्च,2016

इलेक्ट्रानिकी में उत्कृष्टता का 50वाँ वर्ष

# उपलब्धियों का एक और नया अध्याय .....

श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार;
श्री अनंत कुमार, माननीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री, भारत सरकार की गरिमामयी उपस्थिति में श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को
**'इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए'**
सम्मानित करते हुए

*ईसीआईएल गौरव संपादन समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ*

**आवरण पृष्ठ :** संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसए) में आयोजित अंतरराष्ट्रीय नाभिकीय सम्मेलन के अवसर पर डॉ. शेखर बसु, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग एवं सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग (सबसे बाएँ) तथा श्री अनुराग कुमार, महाप्रबंधक, उपकरण प्रणाली वर्ग, ईसीआईएल (सबसे दाएँ) साथ में, श्री एल.आर. जाँगरा, प्रमुख, समन्वय प्रभाग, जीसीएनईपी (बाएँ से दूसरे) तथा डॉ. अजय कुमार, परामर्शद (वाणिज्य), भारत का राजदूतावास, डीसी (बाएँ से तीसरे)

ईसीआईएल गौरव

# इस अंक में


ईसीआईएल की अर्धवार्षिक
हिन्दी गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव'

**प्रधान संरक्षक**
**श्री पी. सुधाकर**
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

**संरक्षक**
**श्री वी.एस.बी. बाबु**
निदेशक (कार्मिक)
तथा उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

**परामर्शदाता**
**श्री एन. नागेश्वर राव**
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

**संपादक**
**डॉ. राजनारायण अवस्थी**
हिन्दी अधिकारी

**संपादकीय सहयोग**
श्री ए.पी. राजु, वरिष्ठ प्रबंधक
श्रीमती के. लक्ष्मी राणी, कार्यपालक सचिव
श्रीमती ओ. श्वेता, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
श्री पवनकुमार शर्मा, तकनीकी अधिकारी
श्रीमती एस. गौतमी, लेखा अधिकारी
श्रीमती पी.डी. रम्या तेजा, तकनीकी अधिकारी
श्री कुलदीप कुमार यादव, अभियंता



**संपर्क पता**
**डॉ. राजनारायण अवस्थी**
हिन्दी अधिकारी एवं संपादक 'ईसीआईएल गौरव'
इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद - 500 062
फोन: 040-27182585
ई-मेल: drawasthi@ecil.co.in


| विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|

| प्रधान संरक्षक की कलम से..... | ..... 2 |
| निदेशक (वित्त): शुभकामना संदेश | ..... 3 |
| निदेशक (कार्मिक): शुभकामना संदेश | ..... 4 |
| अपनी बात..... | ..... 5 |
| संपादकीय: कुछ लिखने से पहले..... | ..... 6 |
| **हमारे प्रेरणा-स्तंभ** | |
| डॉ. राजा रमन्ना | ..... 7 |
| **ईसीआईएल के बढ़ते कदम** | |
| पुरस्कार तथा अनुसंधान एवं विकास सहयोग | ..... 8 |
| **तकनीकी स्तंभ** | |
| विकिरणीय संसूचन उपस्कर (आरडीई) प्रणाली | ..... 10 |
| **शुभागमन्-स्वागतम्** | |
| हमारे माननीय अतिथिगण | ..... 14 |
| **राष्ट्रीय समारोह** | |
| गणतंत्र दिवस-2016 समारोह | ..... 16 |
| **राजभाषा स्तंभ** | |
| राजभाषा कार्यशाला एवं कार्यान्वयन | ..... 17 |
| ईसीआईएल में 'विश्व हिन्दी दिवस' एवं 'कवि सम्मेलन' | ..... 21 |
| अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा गतिविधियाँ | ..... 22 |
| **साहित्यिक एवं सामाजिक आलेख** | |
| कबीर की रहस्यवादी एवं सामाजिक चेतना | ..... 26 |
| **महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम** | |
| महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम: झलकियाँ | ..... 28 |
| ईसीआईएल एवं निगमीय सामाजिक दायित्व | ..... 30 |
| सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन | ..... 32 |
| **स्वास्थ्य-सौन्दर्य** | ..... 33 |
| **साहित्यिक रचनाएँ: काव्याँजलि** | ..... 34 |
| **संदेशा आया है** | ..... 37 |



(गृहपत्रिका नि:शुल्क एवं केवल आँतरिक परिचालन हेतु है)
'ईसीआईएल गौरव' में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। ईसीआईएल या संपादन समिति उनसे सहमत हो, यह आवश्यक नहीं है।

**पी. सुधाकर**
**अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक**
**तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति**

**इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड**
**भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम**
**ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद** - 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27121055, 27182206
फैक्स: +91-40-27122535 ई-मेल: cmd@ecil.co.in

# प्रधान संरक्षक की कलम से.....

'ईसीआईएल गौरव' के अंक-6 का प्रकाशन अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। पत्रिका का प्रत्येक अंक अपने विगत अंक से अधिक पठनीय और संग्रहणीय बनता जा रहा है। आप सभी सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाएँ हमें निरंतर रचनाशीलता की ओर प्रेरित करती रहती हैं। पत्रिका का अंक-5 'आकाश' विशेषाँक 'आकाश आयुध प्रणाली' में ईसीआईएल के योगदान पर आधारित था। रक्षा क्षेत्र में ईसीआईएल के बढ़ते कदमों की राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा की गई। रक्षा इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में स्वदेशी संकल्पनाओं, विचारों तथा अनुप्रयोगों के माध्यम से देश की सशस्त्र सेना को और अधिक क्षमतावान बनाना ईसीआईएल का प्रमुख उद्देश्य है।

ईसीआईएल भारत का एकमात्र पूर्ण-एकीकृत नाभिकीय नियंत्रण एवं उपकरणीकरण निगम है। हमने नाभिकीय क्षेत्र में भी इलेक्ट्रानिकी का विकास करके राष्ट्र को सशक्त बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं। नाभिकीय एवं विकिरण आयुध आज के समय सर्वाधिक खतरा उत्पन्न कर रहे हैं। विमानपत्तन, समुद्र पत्तन एवं सीमा चौकियों, देश में प्रवेश करने और बाहर जाने के द्वार में विकिरणीय तत्त्वों सहित सामग्री के अवैध आवागमन को रोकना अत्यंत आवश्यक है। इन समस्याओं को निष्क्रिय करने के लिए ईसीआईएल के विकिरण संसूचक एवं उपकरणीकरण प्रभाग ने नाभिकीय सुरक्षा प्रणाली के अंतर्गत अत्याधुनिक स्वदेशी प्रौद्योगिकी का विकास करके 'विकिरणीय संसूचन उपस्कर (आरडीई) प्रणाली' विकसित किया है। इसका उपयोग जल, थल तथा वायु में किया जा सकता है। 'ईसीआईएल गौरव' का यह अंक-6 'आरडीई' विशेषाँक है। राष्ट्र की इस महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक सफलता के पीछे ईसीआईएल सदैव प्रयासरत रहा है। हमने राष्ट्र की सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास (जेएनपीटी), मुंबई में विभिन्न प्रकार के विकिरणीय संसूचन उपस्करों को प्रदायित एवं संस्थापित किया है। हमने नाभिकीय विशेषज्ञता के क्षेत्र में चार दशक से भी अधिक की लंबी यात्रा कर ली है। आइए! हम सब एक साथ मिलकर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ें। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में मौलिक अनुसंधान कर राष्ट्र के चहुमुँखी विकास में अपना योगदान दें।

*जय हिन्द*

पी.सुधाकर
**(पी. सुधाकर)**

किशोर रुंगटा
निदेशक (वित्त)

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद - 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27121522, 27182216
फैक्स: +91-40-27137509 ई-मेल: dirfin@ecil.co.in

# शुभकामना संदेश

'ईसीआईएल गौरव' अंक-6 के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। किसी भी संगठन की गृहपत्रिका उसकी कार्य संस्कृति का प्रतिबिम्ब होती है। गृहपत्रिका के माध्यम से पाठक संगठन को गहराई से जान सकते हैं। अत्यंत हर्ष का विषय है कि पत्रिका की व्यापकता निगमीय स्तर पर है। 'आकाश' विशेषाँक, अंक-5 ने रक्षा क्षेत्र में ईसीआईएल के बढ़ते कदम को राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया। यह अंक-6 'विकिरणीय संसूचन उपस्कर प्रणाली के विकास एवं संस्थापन में ईसीआईएल के योगदान' पर आधारित है। निश्चित ही हमारे समक्ष आने वाला समय और अधिक चुनौतीपूर्ण होगा। हमें अपनी प्रौद्योगिकी को निरंतर अद्यतन करते रहना चाहिए। निगम की अनुसंधान एवं विकास रिपोर्ट को द्विभाषी रूप में प्रकाशित करना प्रशंसनीय प्रयास है। मुझे पूर्णविश्वास है कि निगम में इसी प्रकार की निरंतरता बनी रहेगी।

यह भी प्रसन्नता का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद द्वारा हमारे निगम को वर्ष 2014-15 की अवधि में बड़े कार्यालयों की श्रेणी में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 'राजभाषा शील्ड' प्रदान की गई। मुझे खुशी है कि पत्रिका के इस अंक में मुख्यालय सहित निगम के विभिन्न अधीनस्थ कार्यालयों की राजभाषा गतिविधियों को भी सम्मिलित किया गया है। मैं इस अंक के सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ कि उनका रचनात्मक कौशल इसी प्रकार निरंतर रूप से पल्लवित एवं सशक्त होता रहे।

*इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,*

***जय हिन्द***

किशोर

**(किशोर रुंगटा)**

**वी.एस.बी. बाबु**
**निदेशक (कार्मिक)**
**तथा उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति**

**इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड**
**भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम**
**ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद** - 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27121484, 27182221
फैक्स: +91-40-27120033 ई-मेल: dirper@ecil.co.in

# शुभकामना संदेश

'ईसीआईएल गौरव' अंक-6 का प्रकाशन हर्ष का विषय है। जीवन में भाषा और सृजनात्मकता का अत्यंत गहरा संबंध है। सृजनात्मकता के आयामों को किसी परिभाषा में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। यह जीवन की एक अनवरत यात्रा है। इसमें सामाजिकता, अनुशासन, एकाग्रता एवं विभिन्न संकल्पों का समावेश होता है। किसी भी संगठन के मानव संसाधन में इन गुणों का समावेश होना चाहिए। आज के बदलते परिवेश में हमें तकनीकी, प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग तथा वित्तीय प्रावधानों जैसे प्रत्येक क्षेत्र में आगे रहकर सदैव स्वयं को अद्यतन बनाए रखना है। आगे आने वाले समय में वही संस्थान प्रगति की ऊँचाइयों को स्पर्श कर पाएगा जो समय, प्रौद्योगिकी एवं ग्राहकों की माँग के अनुरूप स्वयं को अद्यतन बनाए रखेगा। मुझे पूर्णविश्वास है कि हम लोग राष्ट्र की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप परस्पर एक साथ मिलकर अपना शत-प्रतिशत योगदान देंगे। आप लोगों की कार्य-कुशलता, कार्यनिष्ठा एवं कर्त्तव्यपरायणता पर पूरे निगम को गर्व है। मैं आप सभी से अपेक्षा रखता हूँ कि संगठन के प्रति कर्त्तव्यपरायणता को इसी प्रकार बनाए रखेंगे क्योंकि आने वाला समय और भी अधिक चुनौतीपूर्ण होगा। सम्माननीय ग्राहकों की यथा-अपेक्षित तकनीकी एवं प्रौद्योगिकीपरक आवश्यकताओं को पूरा करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है लेकिन इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, हमारे प्रति उनके विश्वास को सदैव अक्षुण्ण रखना।

'ईसीआईएल गौरव' के माध्यम से मैं अपने आँचलिक, शाखा एवं यूनिट कार्यालयों के कार्मिकों का विशेष रूप से हार्दिक अभिनंदन करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के संपादन कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। मैं आशा करता हूँ कि हमारे कार्मिक 'ईसीआईएल गौरव' के माध्यम से अपनी सृजनात्मकता को इसी प्रकार पल्लवित करते रहेंगे। 'आकाश' विशेषाँक पर पाठकों की प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। मैं सभी पाठकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। इस अंक पर भी आपकी महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। मैं 'ईसीआईएल गौरव', अंक-6 की सफलता की शुभकामना करता हूँ।

***जय हिन्द***

वी एस बी बाबु
**(वी.एस.बी. बाबु)**

# अपनी बात.....

'ईसीआईएल गौरव' अंक-6 आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत आशान्वित अनुभव कर रहा हूँ। 'ईसीआईएल गौरव' के प्रकाशन के संदर्भ में प्रबंधन की यह संकल्पना थी कि इसे मात्र हिन्दी अनुभाग तक सीमित न रखकर निगमीय स्तर पर प्रकाशित किया जाए। इस संबंध में, मैं पूर्णरूप से आशान्वित एवं हर्षित हूँ कि 'ईसीआईएल गौरव' इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड की सभी प्रौद्योगिकियों एवं उत्पादों को क्रमश: स्पर्श कर रही है। पत्रिका का विगत अंक-5 'आकाश' विशेषाँक रक्षा क्षेत्र में ईसीआईएल के बढ़ते कदम पर आधारित था। रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन और राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयोगशालाओं से हमें 'आकाश' विशेषाँक पर प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। मैं अपने इन सभी सम्माननीय पाठकों के प्रति सादर आभार व्यक्त करता हूँ।

राजभाषा के क्षेत्र में अपने लगभग 36 वर्षों के अनुभव के आधार पर आज मैं यह कह सकता हूँ कि राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में हमने अनेक आयामों को पार कर लिया है। अब मैं 31 मई, 2016 को सेवानिवृत्त हो रहा हूँ। मैं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उन सभी के प्रति आभारी रहूँगा जिन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन में स्वयं आगे बढ़कर मेरा साथ दिया। कार्यालय का हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि 'कार्यालय परिवार से बढ़कर होता है'। परिवार की सुसंस्कृत संतति को देखकर सभी को हर्ष होता है। मुझे यह लिखते हुए हर्ष हो रहा है कि हमारा हिन्दी अनुभाग आने वाले समय में निगम की आवश्यकताओं एवं दिशा-निर्देशों के अनुपालन में पूर्णरूपेण सक्षम है। लेकिन जब मैं अस्सी के दशक से आज के हिन्दी अनुभागों की कार्य संस्कृति, संसाधन उपलब्धता तथा मानव संसाधन उत्कृष्टता की तुलना करता हूँ तो एक लंबा अंतराल सामने आ जाता है। उस समय के हिन्दी अनुभाग के संसाधनों की अपेक्षा आज के हिन्दी अनुभाग पूर्णत: साधन-संपन्न हैं। हिन्दी भाषा के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी ने तो एक नवीन क्राँति ला दी है। मुझे पूर्णविश्वास है कि आने वाला समय राजभाषा अनुभागों के लिए उपलब्धियों से भरा, लेकिन चुनौतीपूर्ण होगा। वही राजभाषा अनुभाग सफलता की नई ऊँचाइयों को स्पर्श कर पाएगा जो समय के साथ एवं समयानुकूल नित-नवीन सूचना प्रौद्योगिकी को आत्मसात् करेगा। 'ईसीआईएल गौरव' का यह अंक-6 'आरडीई' विशेषाँक है। इसमें विकिरणीय संसूचन उपस्करों से परिचित कराया गया है। नाभिकीय क्षेत्र में ईसीआईएल का यह एक और बढ़ता कदम है।

पत्रिका को इस रूप में प्रस्तुत करने में मैं निगम के समस्त लेखकों, विशेषत: आँचलिक कार्यालयों के रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। मेरी शुभकामना है कि उनका सहयोग आगे भी इसी प्रकार बना रहे। पत्रिका के विगत अंकों की भाँति इस अंक पर भी आपकी प्रतिक्रियाओं का मैं पूर्ण सहृदयता के साथ सम्मान करूँगा।

*आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में.....*

**(एन. नागेश्वर राव)**

**उप महाप्रबंधक (राजभाषा)**

# संपादकीय

## कुछ लिखने से पहले.....

'ईसीआईएल गौरव' अंक-6 सम्माननीय पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। विगत अंकों से प्राप्त अनुभवों एवं आदरणीय सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाओं के माध्यम से इस अंक को उत्कृष्टतम बनाने की दिशा में प्रयास किया गया है। संपादकीय कौशल में समय प्रबंधन को अपना आधार बनाकर, पत्रिका प्रकाशन कार्य में अपने स्वयं के विगत अनुभव अत्यंत प्रभावी रहे हैं। यह अंक-6 'विकिरणीय प्रौद्योगिकी' पर आधारित है। मैं उन सभी लेखकों के प्रति सादर आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन कार्य में सहयोग दिया है।

'ईसीआईएल गौरव' अंक-5 'आकाश' विशेषाँक पर राष्ट्रीय स्तर पर सम्माननीय पाठकों से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। ईसीआईएल की महिला अभियंता अधिकारियों द्वारा भारतीय सशस्त्र सेना के जवानों एवं अधिकारियों को आकाश आयुध प्रणाली से संबंधित तकनीकी प्रशिक्षण देना एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। निश्चित ही 'महिला सशक्तीकरण' के क्षेत्र में ईसीआईएल ने अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस पत्रिका ने वैज्ञानिक संस्थानों की पत्रिकाओं में राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाया है। राष्ट्रीय स्तर की अनेक प्रयोगशालाओं, संस्थानों एवं कार्यालयों ने 'मौलिक विज्ञान लेखन एवं वैज्ञानिक अनुवाद' विषय पर विशेष व्याख्यानों के लिए मुझे आमंत्रित किया। इसके लिए मैं डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम प्रक्षेपास्त्र समष्टि, अनुसंधान केन्द्र इमारत (आरसीआई), रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, हैदराबाद; साँस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी), हैदराबाद तथा उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल), हैदराबाद का विशेष रूप से आभार मानता हूँ।

मैं परम श्रद्धेय प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ. रवीन्द्रकुमार उपाध्याय, प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बड़ोलीघाटा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) का विशेष आभार मानता हूँ कि उन्होंने अपने विद्यालय की प्रार्थना सभा में ईसीआईएल के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी। विद्यालय के सभी छात्रों के प्रति शुभाशीर्वाद के साथ ईश्वर से कामना है कि वे देश की राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं संस्कृति की रक्षा के लिए सदैव सबसे आगे रहें। मैं सभी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करता हूँ। इस पत्रिका की संपादन यात्रा में परम श्रद्धेय श्री एन. नागेश्वर राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) का आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन सदैव अविस्मरणीय रहेगा। राजभाषा कार्यान्वयन के प्रत्येक क्षेत्र में वे मेरे पथ-प्रदर्शक एवं प्रेरणास्रोत रहे। मुझे पूर्णविश्वास है कि उनका प्रेरक व्यक्तित्व सदैव प्रेरणा-पुंज के समान मेरा मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

मैं अपने उन मित्रों एवं सुधी पाठकों के प्रति अत्यंत विनम्रता के साथ सादर श्रद्धावनत हूँ जिन्होंने प्रतिक्रियाएँ भेजीं। इस अंक में मैंने उनके सुझावों का पूर्णनिष्ठा के साथ अनुपालन किया है। मैं अपने प्रिय मित्रों एवं सुधी पाठकों से पुन: आशा करता हूँ कि आप इसी प्रकार इस यात्रा में मेरा साथ देते रहेंगे। इसी आशा के साथ कि यह अंक आपको अपनी प्रतिक्रिया लिखने के लिए प्रेरित करेगा.....

**(डॉ. राजनारायण अवस्थी)**
**हिन्दी अधिकारी एवं संपादक**

# हमारे प्रेरणा-स्तंभ

## डॉ. राजा रमन्ना

*(28 जनवरी, 1925 - 24 सितंबर, 2004)*

भारतीय परमाणु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जगत में डॉ. राजा रमन्ना का नाम सदैव अविस्मरणीय रहेगा। डॉ. राजा रमन्ना का जन्म मैसूर में 28 जनवरी, 1925 को हुआ था। इनके पिता का नाम रमन्ना और माता का नाम रुक्मिणी था। इनके जीवन में इनके माता-पिता के साँस्कृतिक-दर्शन का पर्याप्त प्रभाव था। बाल्य अवस्था से ही डॉ. राजा रमन्ना को संगीत के प्रति गहरी रुचि थी, जिसके बाद उनके माता-पिता ने उन्हें पश्चिमी संगीत से परिचित करवाया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा बेंगलूरू के बिशप कॉटन बोयज़ स्कूल से प्रारंभ हुई जहाँ उन्होंने मुख्यत: साहित्य और पारंपरिक संगीत की शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने मद्रास क्रिस्चियन कॉलेज से भौतिकी विषय में बी.एस-सी. की डिग्री अर्जित की और सन् 1947 में 'पारंपरिक संगीत' में बी.ए. की डिग्री भी ली। इसके पश्चात् इन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जहाँ से उन्होंने भौतिकी में एम.एस-सी. और फिर 'संगीत' विषय में स्नातकोत्तर किया।

उसके पश्चात् सन् 1952 में डॉ. राजा रमन्ना को राष्ट्रमंडल छात्रवृत्ति मिली, जिसके उपरान्त वे 'डॉक्टरेट' करने के लिए इंग्लैंड चले गए। उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय के किंग्स कॉलेज में 'डॉक्टरेट' के लिए प्रवेश लिया और सन् 1954 में 'परमाणु भौतिकी' में अपना 'डॉक्टरेट' पूरा किया। यूनाइटेड किंगडम में उन्होंने अपना शोध 'एटॉमिक एनर्जी रिसर्च एस्टाब्लिश्मेन्ट' में किया जहाँ उन्होंने 'न्यूक्लियर फ्यूल साइकिल' और 'न्यूक्लियर रिएक्टर डिजाइनिंग' में निपुणता प्राप्त की। संगीत में उनकी गंभीर रुचि थी और इंग्लैंड प्रवास के दौरान उन्होंने यूरोपीय संगीत का खूब आनंद लिया तथा पश्चिमी दर्शन के बारे में भी पढ़ा और जाना। पश्चिमी संगीत तथा सभ्यता में डॉ. राजा रमन्ना की रुचि जीवन-पर्यन्त रही। भारत लौटने के बाद उन्होंने स्वयं को 'प्रतिभावान पियानो वादकों' जैसा पारंगत किया। उन्होंने भारत और विदेशों में कई संगीत कार्यक्रमों में परंपरागत यूरोपीय संगीत का प्रदर्शन किया। सन् 1956 में पाकिस्तान के 'नेशनल कॉलेज ऑफ आर्ट्स' और 'नेशनल अकैडमी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स' के आमंत्रण पर उन्होंने वहाँ 'क्लासिकल पियानो' पर एक भाषण दिया और अपनी कला का प्रदर्शन भी किया।

**भारत का परमाणु कार्यक्रम:** डॉ. राजा रमन्ना भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रारंभ किए गए देश के 'परमाणु कार्यक्रम' से जुड़े हुए सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक थे। सन् 1954 में इंग्लैंड से 'डॉक्टरेट' करने के बाद वे भारत लौट आए और डॉ. होमी जहाँगीर भाभा के नेतृत्व में 'भाभा एटॉमिक रिसर्च सेन्टर' में वरिष्ठ तकनीकी दल में नियुक्त हो गए। सन् 1958 में उन्हें इस कार्यक्रम का चीफ डायरेक्टिंग ऑफिसर नियुक्त किया गया। डॉ. होमी जहाँगीर भाभा के असामयिक निधन के बाद उन्हें इस कार्यक्रम का प्रमुख बना दिया गया तथा सन् 1974 में उनके नेतृत्व में भारत ने पहले परमाणु परीक्षण (स्माइलिंग बुद्धा) में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जिसके बाद डॉ. राजा रमन्ना को अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली और भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया। अपने कार्यकाल के बाद के दिनों में डॉ. राजा रमन्ना ने कठोर नीतियों को बनाने की वकालत की, ताकि परमाणु प्रसार रोका जा सके। उन्होंने 'अंतरराष्ट्रीय भौतिकी सम्मेलन' में भाग लेने के लिए पाकिस्तान की भी यात्रा की और परमाणु भौतिकी पर भाषण दिया। उन्होंने भारत-पाकिस्तान के मध्य शाँति स्थापित करने के प्रयासों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और इस क्षेत्र में 'परमाणु टकराव' रोकने में अग्रणी भूमिका भी निभाई।

**सन् 1984 में उन्होंने अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा संस्थान में कार्यभार ग्रहण कर लिया और आईएईए के 30वें महा अधिवेशन के अध्यक्ष भी रहे।**

सन् 1984 में उन्होंने अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा संस्थान में कार्यभार ग्रहण कर लिया और आईएईए के 30वें महा अधिवेशन के अध्यक्ष भी रहे। भारत सरकार तथा अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने उन्हें सम्मानित किया। प्रमुख सम्मान इस प्रकार हैं:- सन् 1963 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में 'शाँतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार', सन् 1968 में 'पद्म श्री', सन् 1973 में 'पद्म भूषण' तथा सन् 1976 में 'पद्म विभूषण'। दिनाँक 24 सितंबर, 2004 को उनका देहावसान हुआ। भारतीय प्रौद्योगिकी एवं परमाणु ऊर्जा विभाग में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

◆

# ईसीआईएल के बढ़ते कदम

## पुरस्कार तथा अनुसंधान एवं विकास सहयोग

### नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) 'राजभाषा शील्ड' पुरस्कार

*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; श्री वाई. उदयभास्कर, अप्रनि, बीडीएल तथा अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) से 'राजभाषा शील्ड' पुरस्कार प्राप्त करते हुए*

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की 42वीं अर्धवार्षिक बैठक में बड़े कार्यालयों की श्रेणी में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2014-15 हेतु ईसीआईएल को 'राजभाषा शील्ड' प्रदान की गई।

### 'गवर्नेन्स-नाउ पीएसयू' पुरस्कार

*ब्रिगेडियर कुलदीप सिंह दलाल (नि.), महाप्रबंधक (उत्तर) एवं श्री एम.आर.के. नायुडु, प्रमुख, निगमीय अनु. एवं वि.; अनुसंधान एवं विकास नवप्रवर्तन हेतु 'गवर्नेन्स-नाउ पीएसयू' पुरस्कार प्राप्त करते हुए*

ईसीआईएल को अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान तथा इलेक्ट्रानिकी एवं संबंधित क्षेत्रों में नई प्रौद्योगिकियों के समावेशन के लिए वर्ष 2015 हेतु 'गवर्नेन्स-नाउ पीएसयू' अनुसंधान एवं नवप्रवर्तन पुरस्कार प्रदान किया गया।

### आईएसए 'लाइफ-टाइम उपलब्धि' पुरस्कार

*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; आईएसए से 'लाइफ-टाइम उपलब्धि' पुरस्कार प्राप्त करते हुए*

श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को अन्तरराष्ट्रीय स्वचालन सोसाइटी (आईएसए) द्वारा 'आटोमेशन इंडिया सप्ताह-2016' के दौरान स्वचालन के क्षेत्र में 'लाइफ-टाइम उपलब्धि' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनको भारत में स्वचालन के क्षेत्र में परमाणु ऊर्जा, रक्षा, वाँतरिक्ष तथा सुरक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया है। श्री पी. सुधाकर को उपर्युक्त क्षेत्रों पर स्वचालन के क्षेत्र में 35 वर्षों का सुदीर्घ अनुभव है।

### भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, अहमदाबाद के साथ समझौता ज्ञापन

*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि एवं श्री तपन मिश्रा, निदेशक, अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, अहमदाबाद समझौता ज्ञापन के साथ*

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र (एसएसी), अहमदाबाद के साथ अर्थ स्टेशन में प्रयोग की जाने

# पुरस्कार तथा अनुसंधान एवं विकास सहयोग

वाली मल्टी बैन्ड कंपोजिट फीड प्रणाली के विकास के लिए समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया।

## भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद के साथ समझौता ज्ञापन

*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि एवं डॉ. यू.बी. देसाई, निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद ने समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया*

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद के साथ आने वाली प्रौद्योगिकियों, संयुक्त अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं तथा अन्य उद्योग-शैक्षणिक संबंधी क्रियाकलापों के संबंध में तकनीकी सहयोग के परिप्रेक्ष्य में समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया।

## एसएएमईएल-90, बुल्गारिया के साथ समझौता ज्ञापन

*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि एवं श्री पीटर जिओर्जिव, अध्यक्ष, एसएएमईएल-90 समझौता ज्ञापन आदान-प्रदान करते हुए*

ईसीआईएल एवं एसएएमईएल-90, बुल्गारिया के साथ फेस विनिर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत भारत में विभिन्न प्रकार के जैमर के विकास एवं विनिर्माण के लिए 30 जनवरी, 2016 को समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया। इससे जैमर विकास में भारतीय-भागीदारी बढ़ेगी। इसके परिणामस्वरूप भविष्य में भारत के व्यापार में बढ़ोत्तरी होगी तथा वैश्विक स्तर पर उपभोक्ताओं का समाधान हो सकेगा।

## भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के साथ तकनीकी सहभागिता

*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि एवं डॉ. एम.वाई.एस. प्रसाद, निदेशक, एसडीएससी, एसएचएआर; प्रलेखों का आदान-प्रदान करते हुए*

सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र, श्रीहरिकोटा ने ईसीआईएल को अपने पीएसएलवी अनुप्रयोग के लिए सुरक्षित पीएलसी आधारित स्कैडा प्रणाली के विकास हेतु चुना है। ईसीआईएल एवं एसडीएससी के सहयोगपरक प्रयास से इस प्रणाली को कार्यान्वित एवं प्रदायित किया जा सका। इसके लिए प्रणाली को जटिल निष्पादनपरक मापदंडों के अनुरूप विकसित किया गया। इस प्रणाली ने सभी तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा किया।

## इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केन्द्र, कल्पाक्कम के साथ समझौता ज्ञापन

*डॉ. आर. के. सिन्हा, अध्यक्ष, पऊआ तथा सचिव, पऊवि की उपस्थिति मे श्री पी.आर. वासुदेव राव, निदेशक, आईजीसीएआर तथा श्री पी. सुधाकर, अप्रनि समझौता ज्ञापन आदान-प्रदान करते हुए*

# विकिरणीय संसूचन उपस्कर (आरडीई) प्रणाली

*टी. बालास्वामी **

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल), परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत भारत सरकार का उद्यम है। इसकी स्थापना 11 अप्रैल, 1967 को हुई थी। ईसीआईएल का मुख्य योगदान परमाणु ऊर्जा, वाँतरिक्ष, सुरक्षा प्रणाली एवं समाधान, रक्षा तथा ई-अभिशासन के क्षेत्र में है। राष्ट्र की प्रत्येक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीपरक उपलब्धि में ईसीआईएल सदैव प्रौद्योगिकी सहयोगी रहा है।

ईसीआईएल भारत की एकमात्र पूर्ण एकीकृत नाभिकीय नियंत्रण एवं उपकरणीकरण कंपनी है। इसे 300 रिएक्टर वर्षों से अधिक का अनुभव है। ईसीआईएल विभिन्न रिएक्टर प्रौद्योगिकियों पर कार्य कर रहा है, जैसे; दाबित भारी पानी रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर), प्रोटोटाइप द्रुत प्रजनक रिएक्टर (पीएफबीआर), अनुसंधान रिएक्टर एवं संहत साधारण जल रिएक्टर तथा पूरा नाभिकीय ईंधन चक्र; अयस्क प्रविधि से प्रारंभ होकर ईंधन संविरचन, ऊर्जा निर्माण, भारी पानी उत्पादन, ईंधन पुन: प्रविधीकरण एवं अपशिष्ट निश्चलीकरण। ईसीआईएल के उत्पाद नाभिकीय क्षेत्र में नाभिकीय रिएक्टरों तथा सहयोगी संयंत्रों के सुरक्षित एवं विश्वसनीय प्रचालन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

नाभिकीय एवं विकिरण आयुध आज के समय सर्वाधिक खतरा उत्पन्न कर रहे हैं। विमान पत्तन, समुद्र पत्तन एवं सीमा चौकियों, देश में प्रवेश करने और बाहर जाने के द्वार में विकिरणीय तत्त्वों सहित सामग्रियों के अवैध आवागमन को रोकना अत्यंत आवश्यक है। इन आपदाओं को निष्क्रिय करने के लिए ईसीआईएल ने एक विस्तृत 'विकिरणीय संसूचन उपस्कर प्रणाली' का विकास किया है। इसका उपयोग जल, थल एवं वायु में किया जा सकता है। ईसीआईएल ने एएनएसआई मानकों के अनुरूप अनेक विकिरणीय संसूचन प्रणाली उपस्करों को प्रवर्तित किया है, जैसे:-

- वाहन मॉनीटरन प्रणाली
- डोर वे मॉनीटर, लिम्ब मॉनीटर
- बैगेज में विशेष नाभिकीय पदार्थ के लिए संसूचन प्रणाली
- विकिरण सर्वेक्षण मीटर

*लिम्ब मॉनीटर*

**ये प्रणालियाँ सुरक्षा कार्मिकों को श्रव्य-दृश्य (ऑडियो-विजुअल) अलार्म से सतर्क करेंगी। वाहन निगरानी प्रणाली को समुद्र-पत्तनों में अंदर आने और बाहर जाने के द्वार पर संस्थापित किया जाता है।**

ये प्रणालियाँ सुरक्षा कार्मिकों को श्रव्य-दृश्य (ऑडियो-विजुअल) अलार्म से सतर्क करेंगी। वाहन निगरानी प्रणाली को समुद्र-पत्तनों में अंदर आने और बाहर जाने के द्वार पर संस्थापित किया जाता है। यह प्रणाली अंदर आने और बाहर जाने वाले सभी वाहनों, कन्टेनरों में विकिरण सक्रिय पदार्थ की उपस्थिति की जाँच करती है। यह प्रणाली सक्रिय पदार्थों से उत्सर्जित होने वाली गामा किरणों एवं न्यूट्रानों के संसूचन के लिए संसूचकों से युक्त होती है। इसमें एक कैमरा होता है जो विकिरण सक्रिय पदार्थ को ले जाने वाले वाहन की नंबर प्लेट को कैप्चर करता है और किसी भी प्रकार के संकट (अलार्म) की स्थिति में स्थानीय पत्तन एवं परमाणु ऊर्जा विभाग प्राधिकारियों को पूर्व निर्धारित नंबर में जीएसएम मॉडेम के माध्यम से एसएमएस भेजता है।

* **श्री टी. बालास्वामी**, ईसीआईएल, प्रमुख, विकिरण संसूचक एवं उपकरणीकरण प्रभाग हैं। नाभिकीय इलेक्ट्रानिकी के विकास में इनका विशेष योगदान है। इनके मार्गदर्शन में नाभिकीय इलेक्ट्रानिकी के विकास के क्षेत्र में अनेक राष्ट्रीय परियोजनाओं का कार्यान्वयन हुआ है।

जब साधारण वाहन मार्ग के दोनों ओर लगी प्रणाली से होकर निकलता है तो हरा बल्ब जलता है। यह इस बात का सूचक है कि वाहन विकिरण सक्रिय सामग्री से मुक्त है। जब विकिरण सक्रिय सामग्री को ले जा रहा वाहन निकलता है तो लाल बल्ब जलता है और प्रणाली एक अलार्म भी देती है। साथ ही साथ यह पूर्व निर्धारित नंबर को एक एसएमएस भी भेजती है। जब यह सतर्क सूचना आती है तो द्वार पर तैनात सुरक्षा कर्मी हाथ में लिए जाने वाले उपस्कर के माध्यम से दूसरी जाँच के रूप में वाहन की पूरी तरह छान-बीन करते हैं। भारत के 13 बड़े पत्तनों में वाहन मॉनीटरन प्रणाली का संस्थापन पूरा हो गया है। जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास (जेएनपीटी), मुंबई कन्टेनर के आवागमन वाला सबसे बड़ा पत्तन है। देश के कन्टेनर कार्गो का लगभग 44% आवागमन यहीं से होता है। विगत पाँच वर्षों से निरंतर कन्टेनर में 40 लाख टीईयू को ले जाने का इतिहास बनाया है।

**भारत में विकिरण पोर्टल विनियोजन**

आवागमन के 247 पत्तन

- लगभग 26,000 कन्टेनर्स प्रति-दिन
- लगभग 935 वायुयान प्रति-दिन

**इनकी 100% जाँच अपेक्षित है**

ईसीआईएल ने सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जेएनपीटी में विभिन्न प्रकार की विकिरणीय संसूचन उपस्कर प्रणाली को प्रदायित एवं संस्थापित किया है। ईसीआईएल की विकिरणीय

*जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास, मुंबई में संस्थापित विकिरण संसूचन उपस्कर प्रणाली*

संसूचन उपस्कर प्रणाली राष्ट्र की सुरक्षा की अभिन्न अंग है। आज ईसीआईएल ने नाभिकीय विशेषज्ञता के क्षेत्र में चार दशक से भी अधिक की लंबी यात्रा तय कर ली है। विज्ञान के क्षेत्र में भारत को संरक्षित एवं सुरक्षित बनाने की दिशा में ईसीआईएल सतत प्रगति के पथ पर अग्रसर है। राष्ट्र को सशक्त एवं प्रौद्योगिकीपरक बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देने तथा सामरिक सहभागी बनने के लिए ईसीआईएल को गर्व है।

**भारत में विकिरण पोर्टल मॉनीटरन कार्यक्रम में ईसीआईएल का योगदान:** देश के अंदर और बाहर विशेष नाभिकीय एवं विकिरणशील पदार्थों के अवैध आवागमन को रोकना, संसूचित करना तथा पूर्णरूपेण निषेधित करना।

**अवैध आवागमन की संभावनाएँ:** विशेष नाभिकीय एवं विकिरणशील पदार्थों के अवैध आवागमन की संभावनाएँ निम्नलिखित हैं:-

- आयात / निर्यात
- स्क्रैप धातु उद्योग

- स्क्रैप का निपटान
- आतंकवादी/विध्वंसक गतिविधियाँ

**अवैध आवागमन को रोकने की रणनीति:** ईसीआईएल ने विशेष नाभिकीय एवं विकिरणीय पदार्थों के आवागमन को रोकने के लिए एक सशक्त रणनीति स्थापित की है:-

- देश में आवागमन के संभावित स्थानों जैसे- समुद्री पत्तनों, विमानपत्तनों एवं सीमा-चौकियों पर वाहन मॉनीटर्स तथा पोर्टल मॉनीटर्स के माध्यम से गहन जाँच करना
- देश में नाभिकीय एवं विकिरणीय पदार्थों की आवक के निवारण के लिए बहु-स्तरीय रणनीति

*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि, ईसीआईएल ने स्वभूमि सुरक्षा प्रणाली-विकिरणीय संसूचन उपस्कर (आरडीई) की प्रतिकृति को डॉ. आर. के. सिन्हा, अध्यक्ष, पऊआ एवं सचिव, पऊवि की उपस्थिति में श्री नीरज बंसल, प्रभारी अध्यक्ष, जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास (जेएनपीटी), मुंबई को प्रदान किया*

## भारत के विमान-पत्तनों पर ईसीआईएल

| विमान पत्तन | कुल विमान पत्तन | आपूर्ति एवं संस्थापन |
|---|---|---|
| दिल्ली, कोच्चि, अहमदाबाद, गोवा, गोहाटी, लखनऊ, बेंगलूरू, हैदराबाद, कालिकट, कोलकाता, तिरुवनंतपुरम, अमृतसर, चेन्नै एवं मुंबई | 14 | सभी प्रकार की आपूर्ति पूरी हो गई है। संस्थापन एवं कमीशनिंग कार्य प्रगति पर है। |
| कोयंबटूर, पुणे, गया, वाराणसी, पोर्ट ब्लेयर, जयपुर, भोपाल, इन्दौर, श्रीनगर, पटना एवं तिरुपति | 11 | नागर विमानन मंत्रालय को तकनीकी-वाणिज्यिक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। |
| कोझिकोड़े, भुवनेश्वर, मंगलूर, नागपुर, चंडीगढ़, तिरुचिरापल्ली, विशाखपट्टणम, जम्मू, रायपुर, अगरतला, बागडोगरा, बड़ौदा, मदुरै, इम्फाल, राँची, औरंगाबाद, उदयपुर, लेह, देहरादून, राजकोट, जोधपुर एवं डिब्रूगढ़ | 22 | गृह मंत्रालय से अनुरोध किया गया है कि विमान-पत्तनों को 'विकिरणीय पोर्टल्स' के संस्थापन हेतु सुझाव दिया जाए। |

## भारत के समुद्री-पत्तनों पर ईसीआईएल

| समुद्री पत्तन | कुल पत्तन | आपूर्ति एवं संस्थापन |
|---|---|---|
| बड़े समुद्री पत्तन: गोवा, मुंबई, जेएनपीटी, चेन्नै, विशाखपट्टणम, पारादीप, एन्नूर, टुटीकोरिन, कोच्चि, न्यू मंगलूर, कान्डला, कोलकाता एवं हल्दिया | 13 | 11 पत्तन पूर्णतः पूरे हो गए हैं तथा 2 पत्तन आँशिक रूप से पूरे हो गए हैं। |
| मध्यम समुद्री पत्तन: बेदी बंदर, भावनगर, कालिकट, कडालूर, गोपालपुर, कारवार, मगडाला, मन्डवी, नागपट्नम, नवलखी, ओखापोर्ट, काकिनाड़ा, तिरुवनंतपुरम, रेडी फोर्ट, रत्नागिरि, सिक्का पोर्ट, मुन्द्रा पोर्ट, गंगावरम, कृष्णपट्नम, पोर्ट ब्लेयर, कुट्टूपल्ली एवं कोझिकोड़े | 22 | गृह मंत्रालय से अनुरोध किया गया है कि पत्तनों को विकिरणीय पोर्टल्स के संस्थापन हेतु सुझाव दिया जाए। |

## भारत की भूमि-सीमा चौकियों पर ईसीआईएल
### एकीकृत चेक-पोस्ट (आईसीपी)

| एकीकृत चेक-पोस्ट (आईसीपी) | कुल आईसीपी | आपूर्ति एवं संस्थापन |
|---|---|---|
| आटारी, जोघानी, रक्सौल, पेट्रापोल एवं अगरतला | 5 | भारतीय भूमि-पत्तन प्राधिकरण (एलपीएआई) को तकनीकी- वाणिज्यिक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। |
| हिली, चंग्राबंधा, मोरेह, सुतर खंडी, कोवेरपुचिआ, सुनौली एवं रुपिडिहा | 7 | गृह मंत्रालय से अनुरोध किया गया है कि 'विकिरणीय पोर्टल्स' के संस्थापन हेतु सुझाव दिया जाए। |



मनुष्य अपनी प्रसन्नता के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है --- थोरो

# शुभागमन्-स्वागतम्
## हमारे माननीय अतिथिगण

*ले.जनरल राजीव भाटिया, अविसेमे, महानिदेशक, सेना वायु रक्षा; श्री पी. सुधाकर, अप्रनि से विचार-विमर्श करते हुए*

*श्री मनोहर पर्रिकर, माननीय रक्षा मंत्री, भारत सरकार के साथ श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक*

*सुश्री जे. मंजुला, महानिदेशक (ईसीएस), डीआरडीओ; श्री पी. सुधाकर, अप्रनि से विचार-विमर्श करती हुईं*

*माननीय श्री मनोजकुमार भारती, यूक्रेन में भारत के राजदूत के साथ श्री पी. सुधाकर, अप्रनि विचार-विमर्श करते हुए*

*श्री बी. एस. चंद्रशेखर, निदेशक, आईएसटीआरएसी; श्री पी. सुधाकर, अप्रनि से विचार-विमर्श करते हुए*

*श्री सुदीप जैन, भाप्रसे, महानिदेशक, भारत निर्वाचन आयोग; श्री पी. सुधाकर, अप्रनि से विचार-विमर्श करते हुए*

# शुभागमन्-स्वागतम्
## हमारे माननीय अतिथिगण

*श्री आर.आर. भटनागर, अपर महानिदेशक, केंऔसुब;*
*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि से विचार-विमर्श करते हुए*

*श्री दिनेश प्रभाकर, महानिदेशक, एटीवीपी;*
*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि से विचार-विमर्श करते हुए*

*श्री मनोरंजन कुमार, आर्थिक सलाहकार, ग्रामीण विकास मंत्रालय,*
*भारत सरकार; श्री पी. सुधाकर, अप्रनि से विचार-विमर्श करते हुए*

*प्रो. सुनील गुप्ता, टीआईएफआर, मुंबई (सबसे बाएँ) के साथ*
*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि (मध्य में)*

*डॉ. एस. करुणानिधि, तकनीकी निदेशक, सीएसएल, आरसीआई;*
*आरसीडी के नवीकृत भवन का उद्घाटन करते हुए*

*डॉ. श्री कुमार बनर्जी, पूर्व अध्यक्ष, पऊआ एवं सचिव, पऊवि*
*राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस के अवसर पर ईसीआईएल के स्टाल में*



जहाँ प्रेम और भक्ति नहीं, वहाँ परमात्मा नहीं है --- समर्थ गुरू रामदास

# राष्ट्रीय समारोह

## गणतंत्र दिवस- 2016 समारोह

निगम में 26 जनवरी, 2016 को 67वें गणतंत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने ईसीआईएल के मुख्य प्रवेश द्वार पर राष्ट्रध्वजारोहण कर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के 'सम्मान गार्ड्स' का निरीक्षण किया। समारोह में श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त), श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक), श्री एस. सुरेन्द्र रेड्डी, अध्यक्ष, ईसीआईएल मजदूर संघ तथा श्री पी. श्रीनिवास गौड़, अध्यक्ष, ईसीआईएल अधिकारी संघ भी उपस्थित थे।

*गणतंत्र दिवस के अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक राष्ट्रीय-ध्वज को सलामी देते हुए। साथ में (दाएँ से) श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) एवं श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त)*

*मंच पर (बाएँ से) श्री एस. सुरेन्द्र रेड्डी, अध्यक्ष, ईसीआईएल मजदूर संघ; श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (का.); श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त); श्री पी. श्रीनिवास गौड़, अध्यक्ष, ईसीओए*

*परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय नं. 1 के छात्रों द्वारा देशभक्ति-गान का प्रस्तुतीकरण*

# राजभाषा कार्यशाला एवं कार्यान्वयन

*राजन बी. पाटील **

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित, 1967) एवं राजभाषा नियम, 1976 के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए कार्यालय में 'राजभाषा कार्यशाला' का आयोजन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। राजभाषा कार्यशाला का आयोजन ही वह सार्थक मंच है जहाँ से राजभाषा कार्यान्वयन की सार्थक दिशा तय की जा सकती है। संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के समय भी 'राजभाषा कार्यशाला' का आयोजन प्रमुख निरीक्षण बिन्दु रहता है। कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में इस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। व्यावहारिक धरातल पर यह कहा जा सकता है कि 'राजभाषा कार्यशाला' राजभाषा कार्यान्वयन का मेरुदंड है। प्रमुख रूप से इसके आयाम निम्नलिखित हैं:-

**कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में इस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। व्यावहारिक धरातल पर यह कहा जा सकता है कि 'राजभाषा कार्यशाला' राजभाषा कार्यान्वयन का मेरुदंड है।**

## राजभाषा कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य:

- केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, निकायों, उपक्रमों एवं बैंकों में कार्यरत अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा अपना समूचा कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिन्दी में करवाने के लिए उन्हें राजभाषा कार्यशालाओं में अभिप्रेरित करना
- अभ्यास के अभाव में हिन्दी में कार्य करने में आने वाली झिझक को दूर करना तथा कार्यशालाओं में विविध कार्य-प्रक्रियाओं को हिन्दी में कार्य करने के लिए अभ्यास कराना
- अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा की संवैधानिक स्थिति, महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा जारी आदेश, राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित, 1967); राजभाषा संकल्प 1968; राजभाषा नियम, 1976 (यथा संशोधित, 1987); राजभाषा आयोग, राजभाषा संबंधी समितियों तथा राजभाषा नीति के प्रमुख निदेशों आदि की जानकारी करवाना
- प्रतिभागियों को अनुवाद कार्यान्वयन, वित्तीय एवं अन्य प्रोत्साहन, प्रशिक्षण कार्यक्रम सुविधाएँ, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम, हिन्दी दिवस, हिन्दी सप्ताह, पखवाड़ा, माह, सम्मेलन, संगोष्ठियाँ, हिन्दी प्रतियोगिताएँ, हिन्दी के संदर्भ में कंप्यूटर (विशेष रूप से यूनिकोड) की तथा राजभाषा ज्ञान-प्रश्नोत्तरी आदि की जानकारी करवाना
- प्रतिभागी अपना संपूर्ण कार्यालयीन कार्य सुगमतापूर्वक हिन्दी में कर सकें, इसके लिए उन्हें हिन्दी के स्वर, व्यंजन, अक्षर, वाक्य, अर्थ, मानक लिपि व वर्तनी, पारिभाषिक शब्दावली, व्याकरणिक भूलें व निराकरण, वाक्य साँचे, कार्यालयीन हिन्दी का स्वरूप, हिन्दी में आलेखन व टिप्पण, भाषा के भेद, तत्त्व एवं गुण, कौशल एवं लोकप्रियता, संपन्नता, मानक मसौदे, हिन्दी में डिक्टेशन देने की विधि, विश्व में हिन्दी की प्रस्थिति, हिन्दी में गोपनीय रिपोर्ट भरना, हिन्दी में भारत का संविधान व आचरण नियमावली आदि की संपूर्ण जानकारी देना

## राजभाषा कार्यशाला की तैयारी:

- अनुभवी, योग्य एवं कुशल विषय-विशेषज्ञों का चयन कर व्याख्याताओं का एक पैनल बनाना तथा राजभाषा कार्यशाला में उन्हें क्रमवार आमंत्रित करना चाहिए
- एक वर्ष में तिमाही अंतराल पर चार राजभाषा कार्यशालाओं का आयोजन सुनिश्चित किया जाना चाहिए
- कार्यशाला कक्ष, समय, तिथि, लेखन-सामग्री, पाठ्य-सहायक सामग्री, कार्यसूची, धनराशि आदि की व्यवस्था हेतु सक्षम प्राधिकारी से नियमों, नीतियों का संदर्भ देते हुए अनुमोदन प्राप्त कर लेना चाहिए

* **श्री राजन बी.पाटील**, आँचलिक कार्यालय (पश्चिम), ईसीआईएल, मुंबई में बिक्री अधिकारी एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति हैं। कार्यालय में राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम तथा राजभाषा संबंधी विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन में इनका योगदान प्रशंसनीय है। ये विपणन में स्नातकोत्तर (एमबीए) हैं।

- कार्यशाला में पात्र प्रतिभागियों की सूची, रोस्टर तैयार कर बारी-बारी से उन्हें अलग-अलग वर्गों में प्रशिक्षित करने के लिए एक सुनियोजित रूपरेखा तैयार करनी चाहिए
- प्रस्तावित व्याख्यानों की विषय-वस्तु का चयन प्रतिभागियों के प्रशासनिक तथा तकनीकी स्तर के अनुसार करना चाहिए
- राजभाषा कार्यशालाओं को गरिमामय स्वरूप तथा सकारात्मक संदेश देने के उद्देश्य से कार्यशाला के शुभारंभ एवं समापन अवसर पर किसी वरिष्ठ अधिकारी, विशेषत: कार्यालय अध्यक्ष को आमंत्रित करना चाहिए
- कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों से मूल्याँकन तथा उस पर सामूहिक चर्चा करवानी चाहिए

### व्याख्यान के लिए प्रस्तावित प्रमुख विषय:

- राजभाषा नीति की संवैधानिक स्थिति
- राजभाषा अधिनियम, राजभाषा आयोग, संकल्प एवं नियम
- राजभाषा के संबंध में महामहिम राष्ट्रपति जी के प्रमुख आदेश
- राजभाषा संबंधी प्रमुख समितियाँ
- संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण की समग्र तैयारी
- राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु प्रमुख दिशा-निर्देश
- राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु अभिप्रेरण एवं प्रोत्साहन
- हिन्दी के स्वर, मात्राएँ, व्यंजन, अक्षर, शब्द, वाक्य एवं अर्थ संरचना
- हिन्दी की मानक लिपि एवं वर्तनी
- हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली
- हिन्दी में व्याकरणिक भूलें एवं सुधार
- हिन्दी व अंग्रेजी की वाक्य संरचना तुलना
- कार्यालयीन हिन्दी का स्वरूप
- हिन्दी में आलेखन व टिप्पण
- हिन्दी में भाषा-भेद, गुण एवं कौशल
- हिन्दी के अद्यतन मानक मसौदे
- हिन्दी के संदर्भ में कंप्यूटर (विशेषत: यूनिकोड) की आधारभूत जानकारी
- हिन्दी में डिक्टेशन देने की आदर्श विधियाँ
- राजभाषा हिन्दी संबंधी प्रोत्साहन योजनाएँ
- हिन्दी की वर्तमान वैश्विक स्थिति
- हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एवं सुविधाएँ
- राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम
- राजभाषा ज्ञान प्रश्नोत्तरी
- हिन्दी में कार्यसूची, कार्यवृत्त, प्रेस नोट एवं विज्ञप्ति आदि बनाना
- कार्यशाला समापन पर मूल्याँकन एवं कार्यशाला की उपयोगिता पर चर्चा

**टिप्पणी:** कार्यशाला की सत्रावधि के अनुरूप उपर्युक्त व्याख्यानों को कम अथवा अधिक व्याख्यान शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है।

### भाषा के भाषावैज्ञानिक विविध आयाम:

| | | |
|---|---|---|
| (1) | भाषाई श्रृंखला | ध्वनि-स्वर-अक्षर-शब्द बंध-वाक्य-अर्थ-साहित्य-कला-विज्ञान |
| (2) | भाषा-भेद-I | मातृभाषा, संपर्क भाषा, निज भाषा, राजभाषा, राज्य भाषा |
| (3) | भाषा-भेद-II | साहित्यिक भाषा, कविता की भाषा, व्यक्तिगत भाषा, कार्यालयीन भाषा |
| (4) | भाषाई कौशल | लिखना-पढ़ना, बोलना-समझना, चिन्तन (गौणत:) |
| (5) | भाषाई गुण | सरल, संक्षिप्त, स्पष्ट, सार्थक, संगत, सुग्राह्य |
| (6) | भाषाई तत्त्व | व्याकरण, उच्चारण, शब्द, ज्ञान, लिपि, वर्तनी |
| (7) | भाषा संपन्नता | व्याकरण, शब्द संपदा, ध्वनि वैज्ञानिकता |

## राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की अनिवार्यता:

| | | |
|---|---|---|
| (1) | संवैधानिक दायित्व | (क) भाग-5 (अनुच्छेद-120)<br>(ख) भाग-6 (अनुच्छेद-210)<br>(ग) भाग-17 (अनुच्छेद-343 से 351)<br>**प्रमुख: अनुच्छेद-351 हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश**<br>"संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए जहाँ आवश्यक या वाँछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।" |
| (2) | राष्ट्रपति जी के आदेश | प्रमुखः 27 अप्रैल, 1960 का आदेश |
| (3) | राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित, 1967) | प्रमुखः धारा 3 (3) |
| (4) | राजभाषा संकल्प, 1968 | (क) वार्षिक कार्यक्रम<br>(ख) राजभाषा निरीक्षण एवं समीक्षा<br>(ग) प्रादेशिक भाषाओं का विकास तथा (घ) त्रिभाषा सूत्र, भर्ती परीक्षाओं में द्विभाषिकता |
| (5) | राजभाषा नियम, 1976 (यथा संशोधित, 1987) | कुल नियम-12 |
| (6) | मंत्रालयीन/ राजभाषा विभाग एवं संबंधित विभागीय आदेश | मुख्यालय द्वारा जारी किए गए राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न दिशा-निर्देश |

## राजभाषा प्रेरणास्रोत प्रोत्साहन एवं सुविधाएँ:

| | | |
|---|---|---|
| (1) | राजभाषा समितियाँ | (क) केन्द्रीय हिन्दी समिति<br>(ख) केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति<br>(ग) संसदीय राजभाषा समिति<br>(घ) हिन्दी सलाहकार समितियाँ<br>(ङ) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ<br>(च) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ |
| (2) | हिन्दी प्रशिक्षण | (क) प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तथा पारंगत<br>(ख) हिन्दी टंकण-हिन्दी आशुलिपि<br>(ग) हिन्दी कार्यशालाएँ- अभिमुखीकरण कार्यक्रम, संकाय सदस्यों का प्रशिक्षण (हिन्दी माध्यम से) |
| (3) | प्रोत्साहन | (क) राजभाषा गौरव एवं राजभाषा कीर्ति पुरस्कार<br>(ख) सर्वोत्तम राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार<br>(ग) मंत्रालय- विभाग- उपक्रम व्यक्तिगत पुरस्कार<br>(घ) हिन्दी में काम करने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रोत्साहन योजनाएँ |

| | | |
|---|---|---|
| (4) | सुविधाएँ | (क) कार्यालय समय में नि:शुल्क प्रशिक्षण<br>(ख) नि:शुल्क पाठ्यक्रम पुस्तकें<br>(ग) प्रशिक्षण के लिए मार्गव्यय<br>(घ) प्रोत्साहन राशि<br>(ङ) वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में प्रविष्टि |
| (5) | विविध | (क) कार्यान्वयन<br>(ख) अनुवाद<br>(ग) राजभाषा निरीक्षण<br>(घ) मूल्याँकन<br>(ङ) मसौदा-लेखन<br>(च) कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता |

## राजभाषा में प्रमुख कार्य-प्रक्रियाएँ:

| | |
|---|---|
| 1. टिप्पण एवं आलेखन (पत्राचार) | 8. प्रेस-विज्ञप्तियाँ |
| 2. प्रतिवेदन (रिपोर्ट) | 9. विज्ञापन |
| 3. कार्यवृत्त | 10. सूचनाएँ |
| 4. कार्यसूची | 11. परिपत्र |
| 5. अनुवाद | 12. सम्मेलन |
| 6. सामान्य आदेश | 13. लेखा |
| 7. प्रेस-नोट | 14. संगोष्ठी |

## राजभाषा-नीति के अनुपालन हेतु प्रमुख निदेश:

(1) राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित, 1967) की धारा 3(3) का अनुपालन (कुल 14 प्रकार की सामग्री), राजभाषा नियमों (कुल संख्या-12) का अनुपालन, क्षेत्र 'क', 'ख' तथा 'ग' से राजभाषा नियमानुसार पत्राचार, कार्यालयीन द्विभाषिक रिपोर्ट, मैनुअल, संहिताएँ, पत्र शीर्ष, साइन-बोर्ड तथा रबड़ की मुहरें इत्यादि द्विभाषी/ त्रिभाषी बनवाना।

(2) राजभाषा के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही, छमाही, वार्षिक रिपोर्ट, पूरक सामग्री, प्रशिक्षण रोस्टर आदि का रख-रखाव एवं समय पर प्रेषण, जाँच-बिन्दु, उत्तरदायित्व की अनुभूति तथा वार्षिक कार्यक्रम लक्ष्यों की पूर्ति।

(3) राजभाषा कार्यशालाओं, बैठकों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों, हिन्दी दिवस, हिन्दी- सप्ताह तथा पखवाड़े में विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं का नियमित आयोजन, पत्रिकाओं का प्रकाशन (हिन्दी पर नहीं बल्कि हिन्दी में) तथा संसदीय राजभाषा समिति को दिए गए आश्वासनों पर अनुवर्ती कार्रवाई।

(4) हिन्दी में संदर्भ साहित्य का वितरण एवं प्रयोग, कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करवाना तथा प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करना।

(5) हिन्दी प्रशिक्षण के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नामित करना, लिफाफों पर पता की मुहर हिन्दी/ द्विभाषी रूप में बनवाना। राजभाषा कार्यान्वयन की अद्यतन स्थितियों से कार्यालय अध्यक्ष को निरंतर अवगत कराते रहना चाहिए ताकि राजभाषा नियम, 1976 (यथा संशोधित, 1987) के नियम संख्या- 12 का अनुपालन हो सके।

◆

# ईसीआईएल में 'विश्व हिन्दी दिवस' एवं 'कवि सम्मेलन' का आयोजन

ईसीआईएल में 11 जनवरी, 2016 को 'विश्व हिन्दी दिवस' एवं 'कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रो.अरुण के. तिवारी, निदेशक, केयर फाउन्डेशन, हैदराबाद मुख्य अतिथि तथा वी.एस.बी.बाबु, निदेशक (कार्मिक) एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) तथा कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने की। इस अवसर पर श्री एन.नागेश्वर राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के निर्देशन में डॉ.राजनारायण अवस्थी, हिन्दी अधिकारी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सम्माननीय अतिथियों को मंच पर आमंत्रित किया तथा कहा कि 10 जनवरी, 1975 को प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन नागपुर में किया गया था। इसी कारण प्रति वर्ष 10 जनवरी को 'विश्व हिन्दी दिवस' का आयोजन किया जाता है। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) तथा कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने कहा कि किसी भी प्रभुता संपन्न स्वतंत्र देश की पहचान- उसकी राजभाषा, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज और संविधान होते हैं। हमारा देश एक बहुभाषी देश है। हमारे देश की राजभाषा हिन्दी ने सदैव ही पूरे देश को एकता के एकसूत्र में बाँधने का कार्य किया है। भारत के संविधान में राजभाषा का स्थान पाने वाली हिन्दी को कार्यालयीन कार्य में अपनाना तथा इसका प्रचार-प्रसार करना आज कार्यालय के प्रत्येक कार्मिक का नैतिक एवं संवैधानिक कर्त्तव्य है। यह हमारे लिए संतोष एवं गर्व की बात है कि ईसीआईएल में हिन्दी का प्रयोग दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) द्वारा बड़े कार्यालयों की श्रेणी में ईसीआईएल मुख्यालय को वर्ष 2014-15 के लिए 'राजभाषा शील्ड' प्रदान की गई तथा अंतर-उपक्रम हिन्दी प्रतियोगिताओं में निगम को 05 पुरस्कार प्राप्त हुए। यह सब आप सभी के सम्मिलित प्रयासों का ही परिणाम है।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. अरुण के. तिवारी, निदेशक, केयर फाउन्डेशन, हैदराबाद ने ''जीवन का उद्देश्य- जैसा मैंने डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम से सीखा'' विषय पर जीवन एवं आज के समसामयिक संदर्भ में उनकी रचना एवं कल्पनाशीलता की प्रासंगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मनुष्य के विकास में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और साहस का अप्रतिम योगदान होता है। उन्होंने डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के बहुआयामी व्यक्तित्व के विभिन्न महत्त्वपूर्ण पहलुओं से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक संस्थानों को हिन्दी के विकास और वैज्ञानिक लेखन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के लिए विशेष रूप से योगदान देना चाहिए।

*मुख्य अतिथि प्रो. अरुण के. तिवारी, निदेशक, केयर फाउन्डेशन द्वारा 'ईसीआईएल गौरव', अंक-5 ('आकाश' विशेषाँक) का विमोचन*

इस अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में ईसीआईएल के कवियों ने अपनी ओजस्वी मौलिक रचनाओं के माध्यम से आयोजन को संगीतमय बना दिया। काव्य पाठ में श्री जी.यादगिरि राव, श्री अंकित कात्याल, श्री सुनील कुमार, श्रीमती शीजा शिवराजन, श्री अशोक पी.मोरे तथा पंजाबी लोककला, लोकगायकी एवं संस्कृति के सुप्रसिद्ध कलाकार तथा रंगकर्मी श्री इंद्रजीत सिंह ने अपनी रचनाओं का सस्वर पाठ किया। इस आयोजन में 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति' एवं 'ईसीआईएल गौरव संपादन समिति' के सदस्यों सहित निगम के कार्मिकों ने भरपूर आनंद उठाया। समारोह में गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव', अंक-5 ('आकाश' विशेषाँक) का भी विमोचन किया गया।

समारोह में श्रीमती एन.वी.एस.एस. प्रसन्ना ने ईश वंदना प्रस्तुत की तथा श्रीमती पी.डी. रम्या तेजा ने मुख्य अतिथि का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) तथा कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने मुख्य अतिथि प्रो. अरुण के. तिवारी को स्मृति-चिह्न से सम्मानित किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए श्री एन.नागेश्वर राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में श्री एम.एन.चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी तथा श्री संजयकुमार चौधरी, हिन्दी अनुवादक सहित हिन्दी अनुभाग के सभी सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ◆

# आँचलिक, शाखा एवं यूनिट कार्यालयों में राजभाषा-गतिविधियाँ

## आँचलिक कार्यालय (उत्तर), नई दिल्ली

### राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

कार्यालय में दिनाँक 17-10-2015 को 'राजभाषा हिन्दी एवं कार्यान्वयन' विषय पर राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य कार्मिकों को हिन्दी भाषा के विभिन्न व्याकरणिक एवं भाषागत पक्षों से अवगत कराना था। इस संबंध में हिन्दी व्याकरण के विभिन्न आयामों को उदाहरण सहित समझाया गया। कार्यशाला में प्रतिभागियों ने व्यावहारिक हिन्दी तथा हिन्दी व्याकरण पर प्रश्नोत्तर किया। इस अवसर पर श्री शंकर डे, आँचलिक प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया। श्री सत्य प्रकाश, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अतिथि वक्ता एवं समस्त प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

### मुख्यालय द्वारा राजभाषा निरीक्षण

संघ की राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, नियमों तथा विभिन्न प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए श्री एम.एन.चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी द्वारा दिनाँक 13-02-2016 को आँचलिक कार्यालय (उत्तर), नई दिल्ली का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रलेखों, पत्राचार तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी क्रिया-कलापों का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की विशेष बैठक में कार्यालय के समस्त प्रभाग प्रमुखों ने सहभागिता की। इस बैठक में ब्रिगेडियर कुलदीप सिंह दलाल (नि.), आँचलिक प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने समस्त सदस्यों को संबोधित किया।

*प्रस्तुतिः श्री सत्य प्रकाश, सदस्य-सचिव, राभाकास*

## आँचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई

### राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

कार्यालय में दिनाँक 23-02-2016 को 'मानवीय संबंधों में भाषा की भूमिका एवं तनाव प्रबंधन' विषय पर राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में श्री विश्वनाथ झा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम क्षेत्र), राजभाषा विभाग, मुंबई को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। श्री विश्वनाथ झा ने मानवीय संबंधों में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका एवं तनाव प्रबंधन पर अत्यंत रोचक एवं महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिया। इस अवसर पर कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यशाला के समापन में श्री अजय कुमार तिवारी, आँचलिक प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने भी सदस्यों को संबोधित किया। अंत में श्री राजन बी. पाटील, बिक्री अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अतिथि वक्ता एवं सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

### मुख्यालय द्वारा राजभाषा निरीक्षण

संघ की राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, नियमों तथा विभिन्न प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए डॉ. राजनारायण अवस्थी, हिन्दी अधिकारी द्वारा दिनाँक 05-03-2016 को आँचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों सहित कार्यालय के समस्त अधिकारियों को राजभाषा कार्यान्वयन एवं संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण प्रश्नावली पर प्रस्तुतीकरण दिया गया। निरीक्षण कार्यक्रम में श्री सी.एस. रामटेके, प्रभारी, आँचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्री राजन बी. पाटील, बिक्री अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति और कार्यालय के समस्त अधिकारियों ने सहयोग दिया।

*प्रस्तुतिः श्री राजन बी. पाटील, सदस्य-सचिव, राभाकास*

## आँचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता

### मुख्यालय द्वारा राजभाषा निरीक्षण

संघ की राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, नियमों तथा विभिन्न प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए

श्री एन.नागेश्वर राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा दिनाँक 13-11 से 14-11-2015 तक आँचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रलेखों, पत्राचार तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी क्रिया-कलापों का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की विशेष बैठक में कार्यालय के समस्त प्रभाग प्रमुखों ने सहभागिता की। इस बैठक में श्री देबाशिस देबनाथ, उप आँचलिक प्रबंधक तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने समस्त सदस्यों को संबोधित किया।

### राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

कार्यालय में हिन्दी भाषा के व्याकरणिक, भाषिक तथा विभिन्न व्यावहारिक पक्षों एवं संघ की राजभाषा नीति के संदर्भ में 'राजभाषा नीति, नियम एवं कार्यान्वयन' विषय पर दिनाँक 31-12-2015 को 'राजभाषा कार्यशाला' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री एन.के. दुबे, अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व), कोलकाता को अतिथि संकाय के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम तथा राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रावधानों पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यशाला के अंत में श्री देबाशिस देबनाथ, उप आँचलिक प्रबंधक तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने भी कार्यालय की विभिन्न राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का संचालन श्री तरुण मुखर्जी, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया।

### विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

कार्यालय में 11-01-2016 को 'विश्व हिन्दी दिवस' समारोह का आयोजन किया गया। श्री हिमाद्रि शेखर मंडल, कार्यकारी उप आँचलिक प्रबंधक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों ने हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य एवं उपयोगिता पर अपने-अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सुश्री देवश्री मोदक, हिन्दी अनुवादक ने भी 'विश्व हिन्दी दिवस: आज का सम-सामयिक परिदृश्य' विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया। इस अवसर पर कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। समारोह के अंत में श्री तरुण मुखर्जी, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

### कार्यालयीन हिन्दी बुलेटिन 'प्रयास' का प्रकाशन

दिनाँक 30-03-2016 को कार्यालयीन हिन्दी बुलेटिन 'प्रयास' के चौथे अंक का विमोचन किया गया। इस अंक में श्री देबाशिस देबनाथ, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं उप आँचलिक प्रबंधक; श्री तरुण मुखर्जी, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संदेशों के साथ श्री तपन बनर्जी, उप मुख्य अधीक्षक; श्री रमेन्द्र कुमार, (पूर्व) लेखा अधिकारी; सुश्री देवश्री मोदक, हिन्दी अनुवादक के आलेखों सहित श्री वेलुरू सूर्यप्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक की कविता प्रकाशित हुई है।

*प्रस्तुतिः श्री तरुण मुखर्जी, सदस्य-सचिव, राभाकास*

## आँचलिक कार्यालय (दक्षिण), बेंगलूरू

### राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

कार्यालय में दिनाँक 14-12-2015 को श्री डी.आर. वेंकटसुब्बु, आँचलिक प्रबंधक (दक्षिण) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 68वीं बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में श्री एम.एस.वी. सुबय्या, वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक; श्रीमती वी. माधवी अरोरा, तकनीकी प्रबंधक तथा श्रीमती सी. श्यामला श्रीपाद, उप मुख्य अधीक्षक ने भाग लिया। बैठक में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में कार्यालय प्रमुख की सहभागिता, हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं की समीक्षा तथा उनका राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रभाव, वर्ष 2015-16 के लिए हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषा की पुस्तकों की खरीद आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। बैठक का संचालन श्री एच. बुचप्पा, प्रभारी, कार्मिक वर्ग एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया।

### विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

कार्यालय में दिनाँक 11-01-2016 को 'विश्व हिन्दी दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. मंगल प्रसाद, संपादकः 'भाषा स्पंदन' तथा अध्यक्ष, कर्नाटक हिन्दी अकादमी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में विश्व स्तर पर हिन्दी की उपादेयता और महत्ता पर प्रकाश डाला। अपने अभिभाषण में उन्होंने राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, अनुवाद तथा कार्यालयीन हिन्दी पर विचार प्रस्तुत किए। इस समारोह में कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के समस्त सदस्य तथा अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री एच. बुचप्पा, प्रभारी, कार्मिक वर्ग एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने प्रस्तुत किया।

### संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम) क्षेत्र में सहभागिता

दिनाँक 19-02-2016 को कोच्चि में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र) में श्री एच. बुचप्पा, प्रभारी, कार्मिक वर्ग एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सहभागिता की।

*प्रस्तुतिः श्री एच. बुचप्पा, सदस्य-सचिव, राभाकास*

## शाखा कार्यालय, चेन्नै

### राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

कार्यालय में दिनाँक 12-12-2015 को 'प्रारूप लेखन, टिप्पण लेखन एवं हिन्दी में संभाषण' विषय पर राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री एन.वी. जयकर, प्रभारी, शाखा कार्यालय एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया। कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित श्री वी.श्रीनिवासन, हिन्दी अधिकारी, आईसीएफ, दक्षिण रेलवे ने 'प्रारूप लेखन', 'टिप्पण लेखन' एवं 'हिन्दी में संभाषण कौशल' विषय पर उदाहरण सहित व्याख्यान दिया। 'हिन्दी में संभाषण कौशल' के संदर्भ में अतिथि वक्ता ने हिन्दी की भाषा एवं व्याकरण संबंधी विशेषताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में 'राजभाषा कार्यशाला' अत्यंत प्रभावी रही। इस कार्यक्रम में कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के समस्त सदस्य, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यशाला का संचालन श्रीमती एम.यू. सुधामई, प्रभारी अधिकारी (कार्मिक) एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया। कार्यशाला के सफल आयोजन में श्रीमती बी. विजयलक्ष्मी, मुख्य अधीक्षक तथा श्री आर. सुब्रमणियम, मुख्य अधीक्षक ने पूर्ण सहयोग दिया। कार्यशाला का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

### मुख्यालय द्वारा राजभाषा निरीक्षण

संघ की राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, नियमों तथा विभिन्न प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए श्री एम.एन. चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी द्वारा दिनाँक 30-3-2016 को कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रलेखों, पत्राचार तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी क्रिया-कलापों का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की विशेष बैठक में कार्यालय के समस्त प्रभाग प्रमुखों ने सहभागिता की तथा श्री एन.वी. जयकर, प्रभारी, शाखा कार्यालय एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने समस्त सदस्यों को संबोधित किया।

### संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम) क्षेत्र में सहभागिता

दिनाँक 19-02-2016 को कोच्चि में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र) में शाखा कार्यालय, चेन्नै से श्रीमती बी. विजयलक्ष्मी, मुख्य अधीक्षक एवं सदस्य, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्रीमती एन. राजकुमारी, मुख्य अधीक्षक ने सहभागिता की।

*प्रस्तुतिः श्रीमती एम.यू. सुधामई, सदस्य-सचिव, राभाकास*

## यूनिट कार्यालय, तिरुपति

### राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

कार्यालय में दिनाँक 25-11-2015 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री वी. अजयबाबु, प्रभारी, तिरुपति

यूनिट एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया। अध्यक्ष महोदय ने इस अवसर पर प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली के संदर्भ में राजभाषा हिन्दी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यशाला में अध्यक्ष महोदय ने कहा कि राजभाषा हिन्दी की उन्नति और प्रयोग के प्रति आशा जागृत करने के लिए सभी कर्मचारियों को प्रत्येक शनिवार एक घंटा हिन्दी पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिए। श्री एस. नौषाद, वरिष्ठ प्रबंधक एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कार्यक्रम का सफल संचालन एवं धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

## विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

कार्यालय में दिनाँक 11-01-2016 को 'विश्व हिन्दी दिवस' समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री यू.ए. रज़ा, उप प्रबंधक, स्टेट बैंक आफ हैदराबाद अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। समारोह का उद्घाटन श्री वी. अजयबाबु, प्रभारी,

*मंच पर (बाएँ से) श्री वी. अजय बाबु, प्रभारी, तिरुपति यूनिट; श्री यू.ए. रज़ा, उप प्रबंधक, स्टेट बैंक आफ हैदराबाद; श्री एस. नौषाद, वरिष्ठ प्रबंधक एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति*

तिरुपति यूनिट एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया। अतिथि वक्ता श्री यू.ए. रज़ा ने देश की राष्ट्रीय एकता और अखंडता के संदर्भ में राजभाषा हिन्दी की आवश्यकता तथा उसकी उन्नति एवं प्रचार-प्रसार के परिप्रेक्ष्य में किए जाने वाले महत्त्वपूर्ण प्रयासों का उल्लेख किया। इस अवसर पर कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्य एवं अन्य अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे। श्री एस. नौषाद, वरिष्ठ प्रबंधक एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की हिन्दी प्रतियोगिताओं में सहभागिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुपति के तत्त्वावधान में दिनाँक 13-01-2016 को आंध्रा बैंक, आँचलिक कार्यालय, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय कैम्पस में 'धर्म नगरी तिरुपति नगर में हिन्दी का महत्त्व' विषय पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में कार्यालय से श्री एस.ए. हफीज़, वरिष्ठ अधिकारी ने सहभागिता की।

*'धर्म नगरी तिरुपति नगर में हिन्दी का महत्त्व' विषय पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में श्री एस.ए. हफीज़, वरिष्ठ अधिकारी भाषण देते हुए*

## मुख्यालय द्वारा राजभाषा निरीक्षण

संघ की राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, नियमों तथा विभिन्न प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए श्री एम.एन. चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी द्वारा दिनाँक 28-03-2016 को यूनिट कार्यालय, तिरुपति का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रलेखों, पत्राचार तथा क्रिया-कलापों का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की विशेष बैठक में कार्यालय के समस्त कार्मिकों ने सहभागिता की। इस बैठक में श्री वी. अजयबाबु, प्रभारी, तिरुपति यूनिट एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने समस्त सदस्यों को संबोधित किया।

***प्रस्तुतिः श्री एस. नौषाद, सदस्य-सचिव, राभाकास***

◆

# कबीर की रहस्यवादी एवं सामाजिक चेतना

*राखी* *

'रहस्यवाद' शब्द मूलत: संस्कृत के 'रहस्य' और 'वाद' से बना है। आधुनिक साहित्य में यह शब्द अपने वर्तमान अर्थ में संस्कृत से गृहीत होकर अंग्रेजी के 'मिस्टीसिज्म' के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है। दार्शनिकों एवं कोशकारों ने रहस्यवाद की असाधारण विशेषता के अर्थ में 'मिस्टीसिज्म' शब्द का प्रयोग किया है। पाश्चात्य चिन्तकों के मतानुसार रहस्यवादी परमसत्ता से तादात्म्य प्राप्त करता है। उसकी दृष्टि में जीवात्मा और जगत सभी उस विश्वात्मक और विश्वातीत सत्ता से एकरस रहते हैं। रहस्यवादी सीमा से ऊपर उठते हैं..... जहाँ 'यह','वह','मैं','तू' और 'देश-काल की इकाइयाँ' बहुत पीछे छूट जाती हैं। प्रख्यात समालोचक एवं मनोविश्लेषक डॉ. टी.एच. ह्यूम ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द फिलॉसोफिकल बेसिस ऑफ मिस्टीसिज्म' में प्रेम मार्ग से परमात्मा की प्राप्ति का और उसके लिए आवश्यक सफल सेवा के आदर्श से प्रेरित किसी व्यक्ति के आत्मनिरपेक्ष आग्रह को 'रहस्यवाद' की संज्ञा दी है।

सुप्रख्यात भारतीय साहित्यकार एवं भाषाविद् डॉ. श्यामसुंदर दास के शब्दों में .....''चिन्तन के क्षेत्र का ब्रह्मवाद कविता के क्षेत्र में जाकर कल्पना और भावुकता का आधार पाकर रहस्यवाद का रूप पकड़ता है।'' इस विषय में छायावाद की प्रख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा की रहस्यवाद विषयक परिभाषा दृष्टव्य है। उनके शब्दों में.....''अपनी सीमा को असीम तत्त्व में खो देना रहस्यवाद है।'' रहस्यवाद के धरातल पर कबीर हिन्दी साहित्य के आदि रहस्यवादी कवि माने जाते हैं। इस क्षेत्र में उनका स्थान अप्रतिम है। हिन्दी साहित्य के प्रख्यात समालोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार ''साधना के क्षेत्र में जो स्थान ब्रह्म का है, साहित्य के क्षेत्र में वही स्थान रहस्यवाद का है।'' तात्पर्य यह है कि रहस्यवाद ब्रह्म से आत्मा के तादात्म्य का प्रकाशन है। आलोचकों ने रहस्यवाद की दो कोटियाँ कर दी हैं:-

- भावनात्मक रहस्यवाद
- साधनात्मक रहस्यवाद

कबीर के काव्य में रहस्यवाद के दोनों रूपों के दर्शन होते हैं। भावनात्मक रहस्यवाद को भी अनेक अवस्थाओं में विभक्त कर दिया गया है:-

**प्रथमावस्था** : परमात्मा में आत्मा की दिव्यज्योति का दर्शन

**द्वितीयावस्था** : परमात्मा से मिलने की आतुरता

**तृतीयावस्था** : आत्मा और परमात्मा का ऐक्य

**प्रथमावस्था**: इस अवस्था में परमात्मा आत्मा की दिव्यज्योति के दर्शन से आकर्षित एवं चकित हो जाती है। कबीर अपने प्रियतम के अलौकिक सौन्दर्य पर विमुग्ध हैं। उनके लिए ईश्वर गूँगे के गुड़ के समान अनिर्वचनीय एवं अकथनीय है। स्वयं कबीर के ही शब्दों में .....''गूँगे केरी सरकरा बस बैठा मुसकाई'' एवं ''कहत कबीर पुकार कै अद्भुत कहिए ताहि''।

**द्वितीयावस्था**: इस अवस्था में परमात्मा से मिलने की आतुरता प्रकट की जाती है। इस अवस्था में विरह- मिलन, आशा- निराशा, अभिलाषा- वेदना की अत्यंत सजीव, सरल एवं सहज अभिव्यक्ति होती है। कबीर इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य में अद्वितीय ठहरते हैं। कबीर की अनुभूति की तीव्रता, वेदना की पुकार एवं व्याकुलता की गहराई कदाचित् आज के कलाविज्ञ रहस्यवादी कवियों में भी नहीं मिलती है। कबीर ने मिलन की आतुरता का जिस कलात्मकता और विरह वेदना का जिस मार्मिकता के साथ वर्णन किया है, वह हिन्दी साहित्य क्या, विश्व साहित्य में अतुलनीय है। इस विषय में उनके कुछ शब्द-चित्र रहस्यवाद की शब्द और अर्थपरक व्यंजना के पटल पर एक अमूल्य धरोहर हैं:-

''आँखड़ियाँ झाईं पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि-पुकारि।।''
''सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।।''

* **श्रीमती राखी** धर्मपत्नी श्री केदार सिंह, वैज्ञानिक सहायक 'बी' नियंत्रण एवं स्वचालन प्रभाग (सीएडी), हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल से हिन्दी साहित्य में एम.ए. हैं। भक्तिकालीन साहित्यलेखन; विशेष रूप से निर्गुण साहित्यिक परंपरा-लेखन में इनकी विशेष रुचि है। अपने विद्यार्थी जीवन में साहित्यिक लेखन के लिए ये अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं।

**तृतीयावस्था:** इस अवस्था में आत्मा और परमात्मा के ऐक्य का चित्रण किया गया है। इस संबंध में कबीर के शब्द-चित्र अत्यंत ही हृदयस्पर्शी हैं :-

''लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल।।''

इसी प्रकार;

''ज्यूँ जल में जल पैसिन निकसे, यूँ ढरि मिल्या जुलाहा।।''

कबीर साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर एवं प्रख्यात समालोचक डॉ. गोविंद त्रिगुणायत कबीर के रहस्यवाद के संबंध में लिखते हैं कि ''कबीर के काव्य में प्रेममूलक भावना रहस्यवाद का अनुभूतिमय प्रकाशन है। रहस्यवाद की अभिव्यक्ति अनुभूति के आश्रय से होती है। अनुभूति भावना से संबंधित है और भावना प्रेम की प्रधान प्रवृत्ति है। यह अनुभूति प्रेम पर अवलंबित होने के कारण जीव और ब्रह्म में एक अविच्छिन्न और अनन्य संबंध स्थापित करती है। प्रेम की चरम परिणति दाम्पत्य प्रेम में देखी जाती है।'' अत: रहस्यवाद की अभिव्यक्ति सदा प्रियतम और विरहिणी के आश्रय में होती है। कबीर अपने प्रियतम की अखंड सुहागिन का स्वाँग रचते हुए कहते हैं:-

''दुलहिन गावहु मंगलाचार,
हम घर आए हो राजा राम भरतार।
तन रति करि मैं मन रति करिहौं, पंच तत्त बराती।
रामदेव मोरे पाहुन आए, हौं जोबन मदमाती।।''

कबीर के प्रियतम-मिलन की आतुरता संसार के किसी भी प्रेम व्यापार से अधिक तीखी और चुटीली है। कबीर साहित्य में रहस्यवाद अध्यात्म की अतल गहराइयों तक गया है। आध्यात्मिकता की गहराइयों में जाकर प्राप्त चिन्तन को व्यक्त करना रहस्यवाद की कसौटी है। संसार के विरही जनों के विरह का भले ही कभी अंत होता हो परन्तु कबीर को सदा के लिए विरह व्यथा को झेलना है। रात्रि की समाप्ति के पश्चात् चकवी के लिए चकवे से मिल पाना संभव है, परन्तु कबीर के लिए दिन-रैन दोनों समान हैं। उनके विरह का न 'अथ' है न 'इति':-

''चकवी विछुरी रैन की आइ मिली परभाति।
जो जन बिछुरे राम से ते दिन मिलै न राति।।''

''विरह कमंडल कर लिए वैरागी दोऊ नैन।
माँगे दरस मधूकरी छके रहे दिन रैन।।''

''वासरि सुख ना रैन सुख, ना सुख सपने माँह।
कबीर विछुड़ या राम सूँ ना सुख धूप न छाँह।।''

कबीर में गंभीर रहस्य अनुभूतियों, विरह व्याकुलता, आत्म-समर्पण की उत्कंठा, प्रेमपूर्ण भक्ति, आँतरिक प्रेम की निष्ठा, परमात्मा मिलन की उत्कट अभिलाषा, विरहिणी के विरह पेशल हृदय की नाना स्थितियों की बड़ी ही हृदयप्लावी भावनाएँ उपस्थित हैं। इनमें भावनात्मक रहस्यवाद का आदर्श अपने चरम उत्कर्ष पर है। उनके प्रणयात्मक चित्रों में शृंगार का रूप चाहे लौकिक हो अथवा अलौकिक, उनमें एक अनुपम रस है। वह अपने लौकिक रूप में जितना आह्लादक है उतना ही आतम जनों के लिए आनंददायक है। उनका शृंगार उनके व्यक्तित्व, धर्म और दर्शन के समान कुछ विलक्षण और निराला है। एक ओर जहाँ वह अपने परिष्कृत रूप में लोक-सीमाओं को छूता है तो दूसरी ओर ऊर्ध्वप्रयाण की बलवती प्रेरणा देता है।

**कबीर के प्रियतम-मिलन की आतुरता संसार के किसी भी प्रेम व्यापार से अधिक तीखी और चुटीली है। कबीर साहित्य में रहस्यवाद अध्यात्म की अतल गहराइयों तक गया है।**

हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम कबीर ने तर्कों और प्रमाणों का सहारा लेते हुए अटूट आत्मविश्वास के साथ जन्मजात उच्चता का विरोध किया। व्यावहारिक स्तर पर जातीय एकता तथा सामाजिक समानता का समर्थन इतनी निर्भीकतापूर्वक समूचे मध्ययुग का कोई भी कवि नहीं कर सका। कबीर ने बहुत पहले ही जिस मानवधर्म की स्थापना की थी, आधुनिक युग के अनेक मानवतावादी कवि भी थोड़े संशोधन और परिवर्धन के साथ वही बात कहते हुए पाए जाते हैं। यह भावना केवल कबीर में ही नहीं अपितु सभी संत कवियों में पाई जाती है जिसे उनकी महान उपलब्धि कहा जा सकता है।

◆



सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है, जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है --- मीराबाई

# महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम
## झलकियाँ

सफाई कर्मचारियों हेतु राष्ट्रीय आयोग पर माननीय संसदीय समिति के समक्ष ईसीआईएल का शीर्ष प्रबंधन

भारतीय सेना के लिए इलेक्ट्रानिक फ्यूजों पर आयोजित प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला

मानव संसाधन विकास पर माननीय संसदीय समिति के समक्ष ईसीआईएल का शीर्ष प्रबंधन

श्री पी. सुधाकर, अप्रनि, ईसीआईएल (बाएँ से तीसरे) एसएएमईएल-90, बुल्गारिया के अधिकारियों के साथ

राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह शुभारंभ समारोह में श्री पी. सुधाकर, अप्रनि, ईसीआईएल संबोधित करते हुए

राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. एन. साईं बाबा, मुख्य अधिशासी, नाईस (बाएँ से दूसरे)



विवेक केवल सत्य से पाया जाता है --- गेटे

# महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम
## झलकियाँ

*श्री वाई. एस. मय्या, पूर्व अप्रनि, ईसीआईएल एवं श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; बीएआरसी के लिए आरजीएमएस उपस्कर प्रस्थानित करते हुए*

*श्री वाई. एस. मय्या, पूर्व अप्रनि, ईसीआईएल; बीएआरसी के लिए आरजीएमएस उपस्कर के संबंध में संबोधित करते हुए*

*राष्ट्रीय विज्ञान दिवस- 2016 के अवसर पर ईसीआईएल की उत्पाद-प्रदर्शनी*

*अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अप्रनि, ईसीआईएल संबोधित करते हुए*

*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि (मध्य में) 'वीवी पैट' के विषय में पत्रकारों को संबोधित करते हुए*

*श्री पी. सुधाकर, अप्रनि 'प्रेस-मीट' के अवसर पर 'ईवीएम' तथा 'वीवी पैट' का निदर्शन कराते हुए*



परस्पर व्यवहार विकास की आत्मा है --- बक्सटन

# ईसीआईएल एवं निगमीय सामाजिक दायित्व

*वी.एस.बी. बाबु* *

## इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड की निगमीय सफलता एवं समाज कल्याण परस्पर निर्भर हैं तथा इससे निगमीय कार्यों में सामाजिक मूल्यों का विकास होता है

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल) भारतीय इलेक्ट्रानिक्स में एक सुप्रख्यात नाम है। ईसीआईएल ने सॉलिड स्टेट दूरदर्शन से इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) जैसे अनेक तकनीकी उत्पादों का नव-प्रवर्तन किया है। ईसीआईएल अपने व्यवसाय के माध्यम से समाज के सतत विकास के लिए प्रतिबद्ध है। इससे समुदाय एवं समाज की जीवनशैली में बहुत सुधार हुआ है। ईसीआईएल अपने निगमीय सामाजिक दायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास एवं पर्यावरण संरक्षण जैसे चार प्रमुख क्षेत्रों में विशेष योगदान दे रहा है। ईसीआईएल द्वारा वर्ष 2011-12 में निगमीय सामाजिक दायित्व कार्यक्रम प्रारंभ किया गया और अब तक इस कार्यक्रम में 730 लाख रुपये व्यय किए जा चुके हैं। प्रमुख कार्यकलापों का विवरण इस प्रकार है:-

**1. शिक्षा:** ईसीआईएल ने अपने आस-पास के राजकीय विद्यालयों का सर्वेक्षण किया तथा पाया कि इन विद्यालयों में पढ़ने-लिखने की आधारभूत संरचना का बहुत अभाव है। इन विद्यालयों में पढ़ने वाले अधिकाँश बच्चे समाज के हाशिए वाले वर्ग से हैं। अत: कंपनी ने इस कार्य को प्राथमिकता से लिया तथा इन राजकीय विद्यालयों में पढ़ने के लिए कमरों, खाना बनाने तथा खाने के लिए कमरे, बहु-उद्देश्यीय हाल, विद्यालय के चारों ओर दीवार तथा प्रसाधन और उनमें पानी की आपूर्ति का प्रबंध किया। ईसीआईएल ने विद्यार्थियों में शैक्षिक वातावरण को रुचिकर बनाने के लिए दोहरी मेजें, ग्रीन बोर्ड, स्कूल बैग और पानी की बोतलों का वितरण किया। कंपनी ने विद्यार्थियों को सुरक्षित एवं स्वस्थ पानी पीने के लिए आर.ओ. जल संयंत्रों को स्थापित किया। इस आधारभूत संरचना की व्यवस्था से 28 राजकीय विद्यालयों के 8,485 छात्र तथा 4,743 छात्राएँ लाभान्वित हुईं।

*विद्यार्थियों के लिए बहु-उद्देश्यीय हाल*

*श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) एमपीयूपी विद्यालय में*

अनेक सामाजिक संगठनों के अनुसार कंपनी के इस प्रयास से विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। विद्यार्थी मन लगाकर पढ़ते तथा नियमित रूप से विद्यालयों में आते हैं। निगम के लिए यह गौरव एवं प्रसन्नता का विषय है कि निगमीय सामाजिक दायित्व के अंतर्गत कमलानगर, नागवरम, रामपल्ली एवं चेरियाल के अंगीकृत विद्यालयों को तेलंगाना राज्य के सर्वोत्तम विद्यालयों में चुना गया है।

**2. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता:** ईसीआईएल ने नलगोंडा जनपद के सुदूर आदिवासी क्षेत्र के चीकटीमामिड़ी ग्राम में 'निज़ाम इंस्टीट्यूट

* **श्री वी.एस.बी. बाबु**, निदेशक (कार्मिक) तथा उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति हैं। मानव संसाधन नीतियों तथा श्रमिक नियमों के कार्यान्वयन के क्षेत्र में इनको विशेष अनुभव है। निगमीय सामाजिक दायित्व से संबंधित शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल-विकास तथा पर्यावरण संरक्षण संबंधी कार्यों में इनका योगदान प्रशंसनीय है।

*विद्यार्थियों के लिए स्वास्थ्य-परीक्षण कार्यक्रम*

आफ मेडिकल साइन्सेस (निम्स)' के डाक्टरों के सहयोग से 875 लोगों का चिकित्सकीय परीक्षण किया। इन लोगों को नैदानिक आवश्यकता के अनुसार दवाइयाँ दी गईं। इस वर्ष निगम ने आस-पास के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए चिकित्सा-

*शारीरिक स्वास्थ्य-परीक्षण कार्यक्रम*

शिविरों का आयोजन कर उनका स्वास्थ्य परीक्षण किया तथा आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों को श्रवण-यंत्र उपलब्ध कराए। भारत के माननीय प्रधानमंत्री के 'स्वच्छ भारत' अभियान के अंतर्गत विद्यालयों में प्रसाधनों का निर्माण किया गया।

**3. कौशल विकास:** कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत निगम ने राजकीय उच्च प्राथमिक एवं हाईस्कूल विद्यालयों में कंप्यूटर केन्द्र का निर्माण कर इन केन्द्रों को कंप्यूटर एवं प्रिन्टर उपलब्ध कराया है। ईसीआईएल ने कक्षा-6 से ऊपर के विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन किया है। इस प्रशिक्षण से इन राजकीय विद्यालयों के अधिकांश विद्यार्थी 'कंप्यूटर शिक्षित' हो कर अपने अध्ययन में इसका लाभ उठा रहे हैं।

*छात्राओं के लिए कंप्यूटर-प्रशिक्षण कार्यक्रम*

**4. पर्यावरण संरक्षण:** निगम ने पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत 1.68 करोड़ रुपये की लागत से एफ्लुएन्ट उपचार संयंत्र का निर्माण कराया। विद्युत के प्रभावी उपयोग के लिए निगम ने स्व-निर्मित 10,000 एलईडी बल्बों को झुग्गी-झोपड़ी तथा आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को वितरित किया।

*एफ्लुएन्ट उपचार संयंत्र (ईटीपी)*

ईसीआईएल ने निगमीय सामाजिक दायित्व को अपनी व्यावसायिक कार्यप्रणाली का महत्त्वपूर्ण अंग बना लिया है। इस कार्यक्रम में निगम समाज-कल्याण एवं सामाजिक हितों को अपने हितों से सदैव सबसे ऊपर रखता है। ईसीआईएल को इस पर गर्व है कि निगमीय सामाजिक दायित्व के इन प्रयासों से समुदाय एवं समाज की जीवनशैली में बहुत सुधार हो रहा है।

*ईसीआईएल का एलईडी बल्ब*

◆



जिस वस्तु का अस्तित्व नहीं है, उसे हम विश्वास से उत्पन्न नहीं कर सकते --- टेनीसन

# सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

निगम में दिनाँक 26-10-2015 से 31-10-2015 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने सभी निदेशकों, वरिष्ठ अधिशासियों को 'सतर्कता जागरूकता प्रतिज्ञा' दिलाई। अन्य कार्मिकों ने अपने-अपने प्रभागों में 'सतर्कता जागरूकता प्रतिज्ञा' ली। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्री एम. नारायण राव, पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिश्र धातु निगम लिमिटेड, हैदराबाद को मुख्य अतिथि के रूप में

*सतर्कता जागरूकता सप्ताह उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अप्रनि; सतर्कता प्रतिज्ञा दिलाते हुए। मंच पर (बाएँ से दूसरे) मुख्य अतिथि, श्री एम. नारायण राव, पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिश्र धातु निगम लिमिटेड, हैदराबाद*

आमंत्रित किया गया था। उन्होंने कहा कि संगठन में भ्रष्टाचार से लड़ने एवं कार्यालय के प्रत्येक क्रिया-कलाप में सतर्कता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का सदुपयोग करना चाहिए।

निगम के मुख्य सतर्कता अधिकारी डॉ. एम. सूर्यप्रकाश ने कर्मचारियों एवं छात्रों में सतर्कता के प्रति जागरूकता लाने के लिए ईसीआईएल द्वारा उठाए गए प्रयासों के बारे में जानकारी दी। इसके लिए छात्रों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ताकि समाज के विभिन्न वर्ग भ्रष्टाचार को मिटाने के प्रति संकल्पशील हो सकें। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ईसीआईएल एक प्रौद्योगिकी संचालित कंपनी होने के कारण ई-अभिशासन, ई-प्रापण, ई-निविदा, प्रतिलोम-निविदा तथा ई-भर्ती के माध्यम से इस भ्रष्टाचार को दूर कर सकती है।

*सतर्कता जागरूकता सप्ताह उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अप्रनि संबोधित करते हुए*

सतर्कता जागरूकता को व्यापक रूप से प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से निगमीय सतर्कता विभाग ने ईसीआईएल परिसर तथा हैदराबाद के विभिन्न विद्यालयों में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। दिनाँक 30-10-2015 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर श्री पी. सुधाकर, अप्रनि ने सभी कार्यपालक निदेशकों, प्रभाग/वर्ग प्रमुखों तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को स्मृति-चिह्न सहित पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन ईसीआईएल के समस्त आँचलिक, शाखा एवं यूनिट कार्यालयों में किया गया।

*सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह के अवसर पर डॉ. एम. सूर्यप्रकाश, मुख्य सतर्कता अधिकारी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए*

◆

# स्वास्थ्य-सौन्दर्य

*निर्मला कुमारी* *

भारत में चाय को खुशबूदार या सब्जी को मसालेदार बनाने में सदियों से अदरक का उपयोग किया जाता रहा है। अदरक मात्र एक मसाला ही नहीं है, यह एक औषधि भी है। मधुमेह के निवारण के लिए यह अत्यंत उपयोगी है। इसका उपयोग शरीर में शर्करा की मात्रा को नियंत्रित रखता है। औषधि एवं सामान्य रूप से इसका उपयोग दो रूपों में किया जाता है; ताजी अदरक के रूप में एवं इसे सुखाकर सोंठ के रूप में। ताजी अदरक ही नहीं सोंठ को भी आयुर्वेद में अत्यंत प्रभावशाली औषधि माना गया है। सोंठ के इन्हीं गुणों के कारण इसका सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। इसमें उपस्थित प्रमुख गुणकारी तत्त्व निम्नलिखित हैं:-

- सोंठ में 1.6 से 2.44 प्रतिशत नाइट्रोजन होती है जिनमें से दो तिहाई प्रोटीन के रूप में होती है

- ये एल्ब्यूमिन, ग्लोब्युलि और ग्लूटामिन नाम से व सूक्ष्म रूप से थ्रिओनिन नाम से पाए जाते हैं। प्रोटीनों के अतिरिक्त मुक्त अमीनो अम्ल भी हैं- यथा; ग्लूटेमिक एसिड, एस्पार्टिक एसिड, सीरीन, प्लाइसीन थ्रीयोविन, ऐलेनीन अर्जीनीन, बेलीन, फिनाइल एलेन, एस्पेरेजीन, लायसीन, सीस्टीन, हिस्टीडीन, ल्यूसीन्स प्रोलीन एवं पाइकोलिक एसिड
- कार्बोहाइड्रेटों में स्टार्च के अतिरिक्त ग्लूकोस, फ्रूक्टोस, सुक्रोस तथा रैफीनील आदि भी सोंठ में पाए जाते हैं

## महत्त्वपूर्ण उपयोगिताएँ:

**कमरदर्द:** कमरदर्द में आधा चम्मच सोंठ का चूर्ण दो कप पानी में उबालकर जब आधा कप रह जाए तब उसे छान लें एवं ठंडाकर उसमें दो चम्मच अरंडी तेल मिलाकर रोज रात को पिएँ।

**कब्ज:** कब्ज होने पर एक चम्मच सोंठ का पाउडर पानी में डालें और उस पानी को उबालकर प्रातः पी लें। कब्ज में यह उपाय रामबाण है।

**आधा सिरदर्द:** सोंठ को चंदन की तरह घिसकर उसका सिर पर लेप करें।

**नेत्र रोग:** सोंठ के साथ नीम के पत्ते या निंबोली पीसकर उसमें थोड़ा सा सेंधा नमक डालकर गोलियाँ बना लें। गोली को मामूली गर्म कर आँखों पर बाँधने से नेत्रों की पीड़ा कम होती है।

**पीलिया, हिचकी एवं एसिडिटी:** सोंठ और गुड़ को पानी में मिलाकर नाक में उसकी बूँदे डालने से हिचकी दूर होती है। सोंठ और गुड़ खाने से पीलिया मिटता है। सोंठ, आँवले और मिश्री का बारीक चूर्ण बनाकर सेवन करने से एसिडिटी खत्म होती है। चार ग्राम सोंठ का काढ़ा बनाकर पीने से पेट की बीमारियाँ समाप्त हो जाती हैं।

**गर्भपात रोकने के लिए:** महिलाओं में गर्भपात रोकने के लिए सोंठ एवं मुलहठी का दूध के साथ सेवन करना चाहिए। इससे गर्भ पुष्ट होता है। बच्चों के पेट में यदि कीड़े हों तो उन्हें अदरक के रस की एक-एक चम्मच मात्रा दिन में दो बार नियमित रूप से देनी चाहिए। अदरक का रस कान में डालने पर कान का दर्द ठीक हो जाता है।

* **श्रीमती निर्मला कुमारी** धर्मपत्नी श्री अनिल कुमार, वैज्ञानिक सहायक 'बी' अभियाँत्रिकी सेवा प्रभाग (ईएसडी) की स्वास्थ्य, सौन्दर्य एवं पर्यावरण विषयक लेखन में विशेष रुचि है। इनके लेखन में 'स्वस्थ-भारत' एवं 'सुंदर-भारत' का संदेश सदैव नए संदर्भों एवं आयामों के साथ प्रत्येक जगह झलकता है। विद्यार्थी-जीवन से ही इनकी लेखन के प्रति विशेष रुचि है।



व्यायाम करने वालों पर बुढ़ापा सहसा आक्रमण नहीं कर पाता --- चरक

# काव्याँजलि

## मेरी माँ!

मेरी माँ ही है मेरी भगवान
उसे मानती अपना इष्ट महान
सदा सजाती और सँवारती
मेरे जीवन का हर संधान ।।

रोज जगाती, रोज पढ़ाती
प्यार-दुलार से हरदम प्रेरित करती
अच्छा खाना देती, ताकि तन-मन बने सशक्त
मैं उसकी ऋणी सदा, आभारी मेरा रक्त-रक्त ।।

माँ! माँ! जब भी मेरे मुँह से सुनती
दौड़ी-दौड़ी आती, हाथ फेरती
मैं यही सोचती माँ, तेरा रोशन नाम करूँगी
जीवन में 'सत्यमेव जयते' का आदर्श धरूँगी ।।

जब भी आती याद तुम्हारी माँ
मेरे जीवन में एक लहर उठ जाती
माँ! तेरा आँचल समुद्र है, तू वसुंधरा है
तू जननी है, तेरी गोदी सतरंगी इन्द्रधनुष है ।।

**कु. के. संजना श्री**
सुपौत्री श्रीमती जी. विजया
ट्रेड्समेन-'सी', वित्त एवं लेखा वर्ग

## वृक्ष की अभिलाषा

माना हम छोटे हैं लेकिन, बुलंद इरादे हैं
इन जड़ों से ही उभरे हैं हम, आसमान भी छू जाते हैं
सूरज की किरणों से पाते और जड़ों तक पहुँचाते हैं
हँसते हैं खुद भी और, सबको ठंडक पहुँचाते हैं ।।

सालों से हम साथ हैं, पर प्यार अभी भी बाकी है
कट जाए उम्र सारी, तब भी दोस्ती साथ निभानी है
याद कर सब की ख्वाहिश, हम हर रोज उग जाते हैं
हर पतझड़ सबके खातिर, हम खुद भी झड़ जाते हैं
कहने को हम पत्ते हैं पर, प्रयास हमारा भी कम नहीं
दिलाने फलों को मिठास, झड़ जाने का भी गम नहीं ।।

अक्सर हम छुपे रहते हैं, पर पानी ढूँढ़ हम लाते हैं
बूँद-बूँद हम बटोर कर, हर पत्ते को पहुँचाते हैं
आँधी हो या तूफान हो, हम फिर भी हँसते गाते हैं
अडिग खड़े हम हर पल, बुलंद जड़ें कहलाते हैं ।।

यह मिट्टी है माँ हमारी, हम इसकी सेवा कर पाते हैं
बचाने को हर कण इसका, हम पकड़ मजबूत बनाते हैं
गम तो यही है कि जिसके लिए हम फल सजाते हैं
फल खाकर भी वे हमको तरह-तरह से तड़पाते हैं
कभी जलाकर ख़ाक करते, कभी काट कर सुखाते हैं
हमें मिटाकर इस मिट्टी को और भी दु:ख पहुँचाते हैं ।।

सोच ले प्यारे खेल न कर, एक दिन ऐसा आएगा
किए अपने काज पर, तू खुद ही पछताएगा
हम तो तेरे ही हैं पगले, हमसे यूँ न द्वेष कर
मान ले बात हमारी, और तू जमकर वृक्षारोपण कर ।।

**आशिष पी. शर्मा**
तकनीकी अधिकारी
सामरिक इलेक्ट्रानिकी प्रभाग



जो वाणी सत्य को सँभालती है, उस वाणी को सत्य सँभालता है --- विनोबा भावे

## मीत! मेरे मनमीत

आप हमारी ज़िन्दगी में इस तरह आए
मानों बहार बनकर छाए
कुछ ऐसा लगा जैसे मेरा रोम-रोम मुस्कराए ।।

इन्तजार तो करवाया आपने भी हमें बहुत
शुक्र है खुदा का, कि हम पर भी रहमत थी थोड़ी बहुत
वरना जाने क्या होता हश्र हमारा
यूँ ही प्यासे भटकते रहते हम इधर-उधर आवारा ।।

आपकी हर अदा कुछ निराली सी है
आपको समझना जैसे, पहेली सुलझाने सी है
हमने जब आपको पा लिया, मानो खुशियों का
ज़हान मिल गया
हमारी वीरान सी ज़िन्दगी के आँगन में
गुलिस्ताँ खिल गया ।।

कोशिश तो हमने बहुत की, कि यह वक़्त थम जाए
ताकि हमारे पुराने जख्मों पर मरहम लग जाए
क्योंकि एक वक़्त का खंजर ऐसा भी था
जब सिर्फ आस-पास, आँसुओं का समन्दर था
रोते रहना मानों हमारा मुकद्दर था ।।

आपको जो पा लिया, टूटे हुए अरमानों को
साज़ मिल गया
कब्रिस्तान में भी गुलिस्ताँ खिल गया
अब तो खुदा से यही दुआ है हमारी
यह गुलिस्ताँ यूँ हीं मुस्कराता और
सदा के लिए महकता रहे ।।

**शीजा शिवराजन**
वरिष्ठ प्रबंधक
रिएक्टर परियोजना प्रभाग

## वक़्त

वक़्त का भी क्या कहना
वक़्त तो यूँ ही निकल जाता है
जैसे बालू हाथ से सरक जाए
वैसे वक़्त निकल जाता है ।।

गुमराह था मैं अपनी ही मस्ती में
पता न चला कब वक़्त निकल गया
जैसे पानी हाथ में नहीं रहता
वैसे वक़्त हाथ से निकल गया ।।

अब याद करके रो रहा हूँ उन पलों को
जब यूँ ही ज़ाया किया वक़्त
पछता रहा हूँ बुरी तरह से
जो यूँ ही बर्बाद किया वक़्त ।।

अब याद आते हैं बचपन के दिन
जब पाठ में पढ़ते थे यह बोल
वक़्त का जीवन में बड़ा ही है महत्त्व
वक़्त बड़ा ही अनमोल है ।।

मन में आया यह विचार
क्या फिर मिल सकता है गुजरा वक़्त?
पर जो बीत गया उस पर रोने से क्या फायदा
क्या लौटके आएगा गुजरा वक़्त?

फिर एहसास हुआ कि अभी भी हुई नहीं है देर
अब आगे न ज़ाया करूँ यह वर्तमान का वक़्त
और जान लूँ आने वाले पलों का महत्त्व
और काम करूँ हर वक़्त ।।

**तेजस शाम मोरे**
लेखा प्रबंधक
आँचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई

# काव्याँजलि

## स्वावलंबन

प्रणाम करेंगे डॉ. ए.एस. राव साहब को
साकार करेंगे स्वावलंबन को
बड़ी प्रेरणा से काम करेंगे
ईसीआईएल की उन्नति के लिए

गुणता को अपनाने के लिए
देश की संपत्ति को, स्वयं समृद्धि से
हर आदमी को स्वयं पोषक बनकर
स्वावलंबन के साथ
देश को स्वयं समृद्ध बनाना है ।।

प्राकृतिक संपत्ति में
देश सशक्त है
संपत्ति को प्राप्त
करने के लिए
निपुणता अधिक है
काम करने के लिए
मानव संसाधन अमित है
सब मिलकर स्वावलंबन
'तारक मंत्र' से
काम करते जाएँ तो
हम सब
आगे जाएँगे
कोई हमें रोक नहीं सकता ।।

इलेक्ट्रानिकी में स्वावलंबन
प्राप्त करने के लिए
अय्यागारु ने ईसीआईएल को
अस्त्र की तरह प्रयोग किया
हैदराबाद में स्थापित कर
प्रौद्योगिकी में आगे ले चले
परमाणु ईंधन में
नियंत्रण प्रभाग बनाया

देश में पहली बार
इलेक्ट्रानिकी संघटकों को
पहले दूरदर्शन को
पहले कंप्यूटर को
पहले ऐन्टेना को
स्वावलंबन के साथ
देश को समर्पित करने में
अपने अन्नदाता 'डॉ. ए.एस. राव साहब' ने
निरंतर प्रेरणा से सत्कार्य किया
इसीलिए वे 'पद्म भूषण' से
सम्मानित हो गए ।।

डॉ. ए.एस. राव का मानस पुत्र
ईसीआईएल है
हर जगह, हर पल में
उनकी प्रेरणा रहेगी
स्वावलंबन श्वाँस से
कर्मचारियों के त्यागफल से
पुन: जीवित हो गया
बड़ी होशियारी से

सामूहिकता से काम करने से
आगे बढ़ सकें
पीछे न देखना पड़े
पूरा ईसीआईएल
प्रयत्न करेगा देश के हित में
स्वावलंबन के साथ, ईसीआईएल को
आगे ले चलेंगे
डॉ. ए.एस. राव की सुसंतति
हम बनेंगे ।।

**जी. यादगिरि राव**
वरिष्ठ मास्टर तकनीशिएन
उपकरण एवं प्रणाली प्रभाग



अच्छे मनुष्यों के लिए वाँछित मित्र की प्राप्ति ही सबसे बड़ी उपलब्धि होती है --- मेघदूत

# संदेशा आया है

पत्रिका का अवलोकन करते-करते मन प्रफुल्लित और गर्वित हो गया कि एक उद्देश्य के साथ उत्साहपूर्वक किसी कार्य को प्रारम्भ किया जाए तो सुखद परिणाम अवश्य प्राप्त होते हैं। विद्यालय की प्रार्थना सभा में भारत के गौरव ईसीआईएल के बारे में विद्यार्थियों को जानकारियाँ दी गईं और प्राप्त अंक को पुस्तकालय में विद्यार्थियों के अवलोकनार्थ रखा गया। 'ईसीआईएल गौरव' के पाठक मंच में अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के ख्यातनाम कुलपति माननीय प्रो. मोहनलाल छीपा से लेकर देशभर के प्रतिष्ठित संस्थानों के पदाधिकारियों के संदेश व प्रतिक्रियाएँ प्रस्तुत पत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' के अखिल भारतीय स्वरूप तथा राष्ट्रीय स्वीकार्यता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।..... 'ईसीआईएल गौरव' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कोटिश: शुभकामनाएँ।

**डॉ. रवीन्द्रकुमार उपाध्याय,** प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बड़ोलीघाटा
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

गत वर्ष भोपाल में आयोजित '10वें विश्व हिन्दी सम्मेलन' में आपकी प्रस्तुति की जानकारी प्राप्त हुई, इसके लिए संगठन की ओर से मैं आपको बधाई देता हूँ। आपकी इस अनन्य उपलब्धि पर यह संगठन भी आपसे जुड़े होने के कारण गर्व करता है एवं आपकी प्रगति की कामना करता है। आपके द्वारा इस संगठन में राजभाषा के क्षेत्र में किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों के आधार पर ही यह संगठन आज इस क्षेत्र में इतनी प्रगति कर रहा है एवं कई पुरस्कार भी प्राप्त कर चुका है। पत्रिका का यह अंक अत्यंत ही रोचक, सूचनापरक एवं प्रशंसनीय है। ईसीआईएल के गुणता सर्कल को 'स्वर्ण पुरस्कार' हेतु बहुत सारी बधाइयाँ। तकनीकी आलेख 'आकाश आयुध प्रणाली में ईसीआईएल का योगदान' पढ़कर बहुत सी जानकारी प्राप्त हुई। ईसीआईएल की राजभाषा तथा अन्य गतिविधियाँ सराहनीय हैं। 'स्वास्थ्य-सौन्दर्य' एवं 'कविताएँ' अत्यंत रोचक एवं प्रेरक हैं। उत्कृष्ट संपादन, अप्रतिम साज-सज्जा एवं अद्वितीय प्रस्तुति हेतु संपादन समिति, विशेष रूप से संपादक महोदय को बहुत-बहुत बधाई।

**प्रकाश नाईक, भारलेसे,** रक्षा लेखा सहायक नियंत्रक
रक्षा लेखा नियंत्रक (अनु. एवं वि.) कार्यालय
हैदराबाद

'ईसीआईएल गौरव', 'आकाश' विशेषाँक प्राप्त हुआ। इस अंक के माध्यम से राष्ट्र के प्रति ईसीआईएल के महत्त्वपूर्ण योगदान के बारे में जानकारी मिली। 'आकाश आयुध प्रणाली' में ईसीआईएल का योगदान अप्रतिम है। यह अत्यंत उत्कृष्ट स्तर की पत्रिका है। पत्रिका के सफल संपादन में आपका परिश्रम स्पष्टत: परिलक्षित है। ईसीआईएल की नवोन्मेषी परियोजनाओं को वैज्ञानिक लेखन के माध्यम से प्रस्तुत करना एक उल्लेखनीय प्रयास है।

**डॉ. सुनेत्रा शोलापुरकर,** राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, मैसूर

'ईसीआईएल गौरव', अंक-5 का मुख्य आकर्षण 'आकाश आयुध प्रणाली में ईसीआईएल का योगदान' उत्कृष्ट है। अन्य लेख भी पठनीय हैं। पत्रिका की भाषा एवं प्रस्तुति को देखकर संपादक के कौशल एवं परिश्रम की बखूबी जानकारी मिलती है। एक श्रेष्ठ गृहपत्रिका के प्रकाशन के लिए पत्रिका के संपादक एवं संपादन-समिति बधाई की पात्र है।

**डॉ. जे. आत्मा राम,** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद

पत्रिका में सम्मिलित की गईं सभी रचनाएँ श्रेष्ठ एवं महत्त्वपूर्ण हैं। श्री अनिल कुमार, वैज्ञानिक सहायक 'बी' द्वारा लिखा गया 'हिन्दी व्याकरण: समास रचना' पठनीय है। श्री राजेश कुमार शर्मा, उप महाप्रबंधक द्वारा लिखी कविता 'स्वच्छ भारत अभियान' एवं श्री सिद्धार्थ कुमार, अभियंता द्वारा लिखी कविता 'आजाद पक्षी हूँ आज मैं' रोचक एवं पठनीय है। श्री एन. उमापति, उप महाप्रबंधक द्वारा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का पेन्सिल द्वारा रेखाँकित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक है। इस पत्रिका द्वारा सामरिक इलेक्ट्रानिकी में स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के विकास के प्रति आपका अप्रतिम योगदान सराहनीय है।

**रवि कुमार,** सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय, हैदराबाद



मानवता का उचित अध्ययन ही मानवता है --- पोप

राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के लिए और शोध कार्य को जनभाषा के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने के उद्देश्य से 'ईसीआईएल गौरव' पत्रिका के प्रकाशन द्वारा आपके संस्थान में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। आशा है कि आप भविष्य में भी इस दिशा में निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे तथा संबंधित गतिविधियों से हमें भी अवगत कराते रहेंगे।

**टी. वी. राजेन्द्रन,** हिन्दी अधिकारी
सीएसआईआर मद्रास कॉम्प्लेक्स, चेन्नै

हमारे संस्थान के निदेशक की ओर से डॉ. शेखर बसु को 'पद्म श्री' पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बहुत-बहुत बधाई। 'आकाश आयुध प्रणाली' में ईसीआईएल का योगदान के लिए आपकी पूरी टीम को बधाई। '10वें विश्व हिन्दी सम्मेलन', भोपाल में आपकी सहभागिता के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका में 'तकनीकी स्तंभ' तथा 'साहित्यिक एवं सामाजिक आलेख' आदि विषयों पर व्यापक जानकारी प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र उन्नत हैं।

**चि.वें. सुब्बाराव,** हिन्दी अधिकारी
राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है तथा पत्रिका का आवरण पृष्ठ स्वयं ही आपके संस्थान की गतिविधियों की झलक दे रहा है। यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है कि आपके संस्थान को 'स्कॉच-ऑर्डर-आफ-मेरिट' पुरस्कार प्राप्त हुआ है। पत्रिका गहन विज्ञान से लेकर सामान्य जीवन तथा संस्थान की सूचनाओं का बृहद् भंडार है।

**महेश कुमार,** तकनीकी अधिकारी (हिन्दी)
भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

'ईसीआईएल गौरव', अंक-5 में प्रकाशित सभी सामग्री बहुत ही सराहनीय एवं सूचनाप्रद है। पत्रिका में प्रकाशित इन्द्रजीत सिंह की कहानी 'आशा की डोर', अपर्णा रंजन की 'दीपदान' एकाँकी, सिद्धार्थ कुमार और राजेशकुमार शर्मा की कविताएँ बहुत ही सराहनीय हैं।

**उत्तम कुमार दास**
हिन्दी नोडल अधिकारी
हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, हैदराबाद

पत्रिका में डॉ. होमी एन. सेठना पर लिखा गया लेख उनके अविस्मरणीय योगदान को प्रस्तुत करता है। श्री उत्पल सेन द्वारा लिखित लेख 'आकाश आयुध प्रणाली' एक उत्तम लेख है जो राष्ट्र की वैज्ञानिक उपलब्धि का परिचायक है। पत्रिका में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को दी गई श्रद्धाँजलि पत्रिका को विशिष्ट बनाती है।

**प्रतिभा आर. बटलवार,** प्रबंधक (हिन्दी)
भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

सर्वप्रथम आपकी प्रयोगशाला को 'स्कॉच ऑर्डर-आफ-मेरिट' पुरस्कार प्राप्त करने की बधाई। आपकी पत्रिका में 'आकाश आयुध प्रणाली' में ईसीआईएल का योगदान बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है। राजभाषा गतिविधियों से भी अच्छी तरह अवगत कराया गया है तथा हिन्दी के लेख भी बहुत सुंदर हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम तथा उनसे संबंधित छायाचित्रों की गुणता भी प्रशंसा योग्य है।

**श्याम पी. अकोलकर,** सहायक निदेशक (राजभाषा)
रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद

'ईसीआईएल गौरव', 'आकाश' विशेषाँक बहुत ही प्रेरणादायी लेखों से परिपूर्ण एवं विषयपरक सुगठित व संपादित है। ईसीआईएल की तकनीकी उपलब्धियों के साथ ही राजभाषा अनुभाग की इन ऊँचाइयों से हिन्दी की गौरवशाली छवि का प्रखर रूप पाठकों के समक्ष आ रहा है। राजभाषा के क्षेत्र में यह प्रयास हमारे लिए भी अनुकरणीय है। सदैव आपके अनुभवी मार्गदर्शन की प्रतीक्षा में,

**नवदीप कुमार कटरे,** सहायक अधिकारी (अनुवाद)
बीएचईएल, हैदराबाद

यह अर्धवार्षिक पत्रिका अपनी रचना-धर्मिता व विषय विविधता के कारण निश्चय ही एक नया आयाम प्रस्तुत कर रही है। इसमें तकनीकी, सामान्य व स्वास्थ्यपरक लेखों को अच्छे ढंग से पिरोया गया है। विविध हिन्दी कार्यक्रमों की झलकियों को भी अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। तकनीकी आलेखों के अतिरिक्त साहित्यिक व सामाजिक लेखों का समावेश अत्यंत ही प्रेरणास्रोत है। इस अति प्रशंसनीय कार्य के लिए इससे जुड़े सभी कर्मचारियों को बधाइयाँ,

**आर.महेश्वरी अम्मा,** हिन्दी अधिकारी
विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तिरुवनंतपुरम

आपके द्वारा प्रेषित 'ईसीआईएल गौरव', अंक-5, 'आकाश' विशेषाँक हमारे कार्यालय को प्राप्त हुआ। इसमें प्रकाशित सभी लेख, विचार, कविताएँ एवं निगम की गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य सामग्री बहुत ही रोचक एवं सराहनीय है। इस संबंध में हमारे कार्यालय की तरफ से आप सबको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ,

**आर.वी. सुधाकर,** हिन्दी अधिकारी
इलेक्ट्रानिकी परीक्षण तथा विकास केन्द्र, हैदराबाद

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख न केवल उत्कृष्ट स्तर के हैं अपितु, इसमें प्रयुक्त हिन्दी भाषा का स्तर भी अत्यंत उच्च कोटि का है। यह नि:संदेह आप जैसे संपादक के अधीन ही संभव है। मुझे यह विशेषाँक प्राप्त करने की खुशी तो है ही, साथ ही इस बात की अधिक खुशी है कि आपने मुझे याद रखा। आशा करता हूँ कि आप यह प्रेम और स्नेह बनाए रखेंगे।

**प्रदीप शर्मा**
रक्षा लेखा नियंत्रक (अनु. एवं वि.) कार्यालय, बेंगलूरू

पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ सुपाठ्य और ज्ञानवर्धक हैं। समस्त रचनाएँ सराहनीय और प्रेरणात्मक हैं। 'स्वास्थ्य सौन्दर्य', 'ईसीआईएल के बढ़ते कदम', 'हिन्दी व्याकरण: समास रचना' आदि लेख अच्छे लगे। 'स्वच्छ भारत अभियान' कविता अच्छी है।

**कल्पना कुमारी,** लेखा अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, हैदराबाद

पत्रिका का अंक काफी आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के विभिन्न विषयों पर आधारित आलेख अत्यंत रोचक हैं। संगठन के विभिन्न कार्यक्रमों से संबंधित छायाचित्र काफी आकर्षक हैं।

**उपेंद्र कुमार शुक्ला,** पर्यवेक्षक (राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, हैदराबाद

यह जानकर कि ईसीआईएल को 'इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम)' एवं 'संबंधित उत्पादों' के विकास हेतु 'स्कॉच ऑर्डर-आफ-मेरिट' पुरस्कार प्राप्त हुआ, उसके लिए आपका निगम बधाई का पात्र है। पत्रिका में प्रकाशित विषय-वस्तु उच्च स्तरीय है। आपकी पत्रिका का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है। आपके संपादक मंडल द्वारा विषय सामग्री का चयन सुविचारित एवं सुनियोजित है। पत्रिका में विषयों का चयन और उनका प्रस्तुतीकरण संतुलित रूप से किया गया है। हिन्दी-वर्धन में आपका एवं आपके निगम का सहयोग सराहनीय है। कृपया पत्रिका को इसी प्रकार अग्रिम पंक्ति की पत्रिका बनाए रखें।

**नवीन कुमार यादव,** अपर महाप्रबंधक एवं हिन्दी प्रभारी
सैन्ट्रल कॉटेज इण्डस्ट्रीज कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली

'ईसीआईएल गौरव', अंक-5 के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ। पत्रिका का यह अंक ज्ञानवर्धक है। रक्षा इलेक्ट्रानिकी से संबंधित तकनीकी आलेख 'आकाश आयुध प्रणाली में ईसीआईएल का योगदान' उत्कृष्ट है। संगठन की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र आकर्षक हैं।

**रोहित कुमार वरकाला,** वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (प्रशासन)
केन्द्रीय भंडारण निगम, हैदराबाद

प्रस्तुत अंक में आपने आकाश आयुध प्रणालियों की उत्कृष्ट जानकारी दी है। साहित्यिक रचनाओं द्वारा मानवीय भावों को सूक्ष्मता से व्यक्त किया गया है। साथ ही डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के प्रति आपकी श्रद्धाँजलि नमनीय है। राजभाषा कार्यान्वयन की विभिन्न गतिविधियाँ हिन्दी के प्रति आपकी कर्त्तव्यनिष्ठा व प्रेम को दर्शाती हैं। आने वाले दिनों में गृह-पत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' की उत्तरोत्तर उन्नति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ,

**अनुराधा सी.के.,** सहायक निदेशक (राजभाषा)
वैमानिकीय विकास संस्थापन, बेंगलूरू

गृह-पत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' में ईसीआईएल की गतिविधियों के व्यापक विवरण के साथ-साथ 'ज्ञान-विज्ञान' एवं 'राजभाषा' संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी जैसे विषयों का समावेश किया गया है, जिससे पत्रिका की सामग्री अत्यंत उपयोगी, सूचनापरक एवं ज्ञानवर्धक हो गई है। इसके अतिरिक्त पत्रिका का मुद्रण अत्यंत आकर्षक है। हिन्दी को लोकप्रिय बनाने और हिन्दी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने की दिशा में आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

**के. सनातनन,** वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
उन्नत आंकड़ा संसाधन अनुसंधान संस्थान (अड्रिन), सिकंदराबाद

पत्रिका अत्यंत ही आकर्षक, सूचनापरक और रोचक है। इस अंक में राजभाषा के साथ-साथ ईसीआईएल से संबंधित जानकारी भी दी गई है। वैज्ञानिक विषयों को राजभाषा हिन्दी में प्रस्तुत करना सराहनीय है। इस अंक में रक्षा इलेक्ट्रानिकी से संबंधित तकनीकी आलेख 'आकाश आयुध प्रणाली में ईसीआईएल का योगदान' प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है। अंक में निगम की गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य रिपोर्टें सम्मिलित की गई हैं जो पठनीय और सूचनापरक हैं। निगम की 'लक्ष्य' टीम को गुणता-प्रबंधन के क्षेत्र में 'स्वर्ण पुरस्कार' प्राप्त करने के उपलक्ष्य में बधाई।

**अरुण कुमार मंडल,** वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
कृते मंडल रेल प्रबंधक (राज), सिकंदराबाद

---

पत्रिका में विषय निवेशन प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। डॉ. होमी एन. सेठना जी का जीवनवृत्ताँत भारतीय परमाणु ऊर्जा क्षेत्र के विकास में उनके अतुल्य योगदान को बतलाता है। श्री उत्पल सेन द्वारा आकाश प्रणाली पर लिखा आलेख सुरक्षा के क्षेत्र में 'ईसीआईएल के बढ़ते कदम' को दर्शा रहा है। 'दीपदान' एकाँकी पर सुश्री अपर्णा रंजन द्वारा लिखा लेख प्रेरणादायी है। श्री इन्द्रजीत सिंह द्वारा लिखा लेख 'आशा की डोर' ग्रामीण कृषि भारत का प्रतिबिम्ब है।

**डॉ. हरि हरन एस.,** सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
सिंडिकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय (नगर), हैदराबाद

---

पत्रिका का मुखपृष्ठ 'आकाश आयुध प्रणाली' को दर्शाते हुए बहुत आकर्षक है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को श्रद्धाँजलि तथा रक्षा क्षेत्र ('आकाश' प्रक्षेपास्त्र) में 'ईसीआईएल के बढ़ते कदम' लेख पत्रिका की शान में चार चाँद लगा रहे हैं। श्री इंद्रजीत सिंह जी द्वारा लिखित लेख 'आशा की डोर' ने तो आज के नौजवानों की बुजुर्गों के प्रति गैर जिम्मेदाराना हरकत से घर की बर्बादी और गलत जिद को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। गृहपत्रिका में संपादक महोदय ने सामाजिक, सामान्य और तकनीकी ज्ञान में संतुलन बनाए रखा है।

**रामध्वनि शर्मा**
तकनीकी अधिकारी 'डी'
रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद

पत्रिका हाथ में आते ही इसकी उत्कृष्टता का अनुमान लग गया था। एक-एक पृष्ठ पलटते हुए पूरी पत्रिका पढ़ी और तुरंत प्रतिक्रिया देने की इच्छा हुई। आप और इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़ा हुआ प्रत्येक सदस्य बधाई का पात्र है। पत्रिका की सामग्री, संपादन एवं कलेवर उच्च कोटि का है। पहले पृष्ठ पर ही डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का रेखाचित्र बहुत सुन्दर है। पत्रिका से संबंधित आलेख और छायाचित्र ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित अन्य रचनाओं एवं विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय झलकियों ने इस अंक को बेहतरीन बनाया है। यह पत्रिका ईसीआईएल द्वारा किए जा रहे तकनीकी कार्यों के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों का एक जीता-जागता उदाहरण है।

**प्रभात कुमार शर्मा,** सहायक निदेशक (राजभाषा)
परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयंत्र, कोटा

---

आपके द्वारा भेजी गई पत्रिका अत्यंत सूचनात्मक एवं उपयोगी है, आशा करता हूँ कि यह प्रकाशन निदेशालय के पाठकों को संदर्भित विषय पर सूचना प्रदान करने में उपयोगी होगा।

**टी.के. भट्टाचार्य**
राष्ट्रीय अध्येता एवं पुस्तकालय प्रभारी
कुक्कुट अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद

---

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक हिन्दी गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' नियमित रूप से प्राप्त होती रहती है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, विचार एवं अन्य सामग्री बहुत ही रोचक एवं सराहनीय है। पत्रिका में संस्थान के बढ़ते कदम एवं अन्य उपलब्धियों को सुन्दर तरीके से दर्शाया गया है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में यह हम सबके लिए बहुत ही प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक होगी। पत्रिका के सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं। 'ईसीआईएल गौरव' को हम 'गौरव' से पढ़ते हैं। 'ईसीआईएल गौरव' की संपादन समिति तथा ईसीआईएल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नराकास (केन्द्र सरकार-1) की ओर से शुभकामनाएँ।

**डॉ. मुनव्वर हुसेन काज़मी**
अध्यक्ष, नराकास (केन्द्र सरकार-1) एवं उप निदेशक प्रभारी
केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

**प्रतिक्रियाएँ भेजने के लिए *'ईसीआईएल गौरव संपादन समिति'* आपके प्रति सादर आभार व्यक्त करती है**



शक्ति द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त करना अधूरी विजय है --- मिल्टन

श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) के साथ
निगमीय प्रबंधन समिति के माननीय सदस्यगण

## संकल्पना

''सामरिक इलेक्ट्रानिकी में देश को आत्म-निर्भरता प्राप्त करने हेतु योगदान देना''

## संकल्प

''परमाणु ऊर्जा, रक्षा, वाँतरिक्ष, नागर विमानन, सुरक्षा तथा सामरिक, आर्थिक और सामाजिक महत्त्व के अन्य क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए विशेष रूप से सामरिक इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में राष्ट्र को उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी प्रदाता के रूप में अपनी स्थिति को सशक्त करना''

**ईसीआईएल को अनुसंधान एवं नवप्रवर्तन हेतु**

**गवर्नेन्स-नाउ पीएसयू पुरस्कार-2015 प्रदान किया गया**

इकाEC

**इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड**

भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम

ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद - 500 062

वेबः www.ecil.co.in